बनादास ग्रंथावली : द्वितीय भाग

संकटमोचन विरुदावली

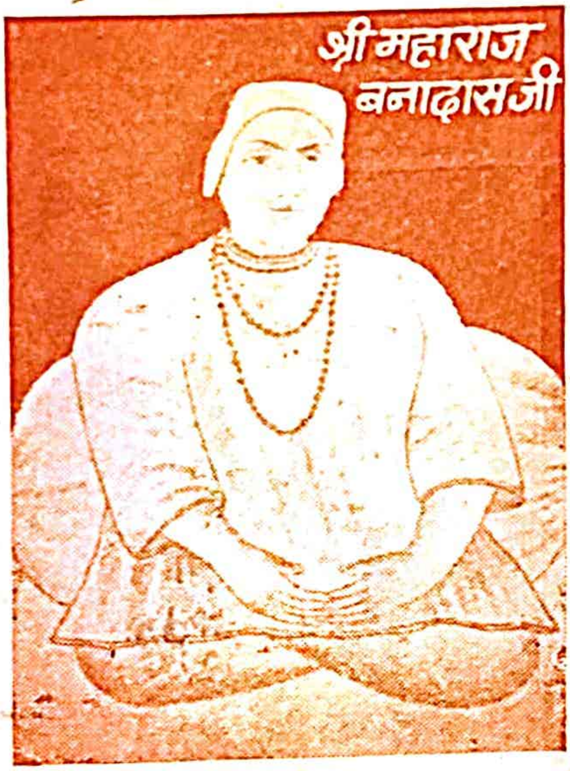

सम्पादक : भगवतीप्रसाद सिंह

बनादास ग्रंथावली : द्वितीय भाग

संकटमोचन विरुदावली

संपादक

डा० भगवती प्रसाद सिंह

पूर्व आचार्य तथा अध्यक्ष

हिन्दी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय

प्रकाशक

महात्मा बनादास स्मारक समिति, अयोध्या

१९९०

प्रकाशक :
महात्मा बनादास स्मारक समिति
'भवहरण-कुञ्ज' तुलसी उद्यान
अयोध्या-२२४१२३

© सर्वाधिकार सम्पादकाधीन

प्रथम संस्करण, अक्तूबर १९९०

मूल्य : पाँच रुपये

मुद्रक :
शिवम् प्रिन्टर्स,
इन्डियन प्रेस कॉलोनी,
मलदहिया, वाराणसी-२२१००२

महात्मा बनादास

के

अनन्य अनुगत

प्रिय अनुज

इन्द्रजीत सिंह

को

सस्नेह

प्रस्तावना

श्रद्धालु पाठकों तथा संतों की सेवा में 'संकट-मोचन विरुदावली' प्रस्तुत करते हुए हमें अपार संतोष का अनुभव हो रहा है। वास्तव में बनादास जी ने इस नाम के किसी पृथक् ग्रंथ की रचना नहीं की थी। प्रतिपाद्य विषय को दृष्टि में रखकर यह नाम इस जन का दिया हुआ है। इसके अंतर्गत उनकी तीन कृतियाँ संकलित हैं—बजरंग विजय, हनुमंत विजय और रोग पराजय। बनादास जी की जीवनयात्रा में इन ग्रंथों का अपना एक अलग इतिहास है।

गृहस्थ जीवन में ग्रंथकार का शरीर-अत्यन्त हृष्टपुष्ट था किन्तु एकलौते पुत्र के शव के साथ सं० १९०८ में अयोध्या आगमन के बाद से ही वह रोगग्रस्त हो गया। 'रोग-पराजय' नामक अपनी अन्तिम रचना में इसका उल्लेख करते हुए वे कहते हैं—

जबते आये सरन में तन करि भोगे दुःख।
बनादास नाहीं मिल्यो सपनेहू में सुक्ख॥
सपनेहू में सुक्ख खोटि प्रारब्ध हमारी।
करै ढुँढ़ाई स्वान परै साहेब सिर गारी॥
निंदा बगरै राम की कौन देखावै मुक्ख।
जब ते आये सरन में तन करि भोगे दुःख॥

'अर्जपत्रिका' के बाद, जिसकी रचना सं० १९०८ में हुई, सं० १९३० तक इनकी किसी रचना में रोगों के प्रकोप की चर्चा नहीं मिलती। इससे स्पष्ट है कि ३० वर्ष से ५३ वर्ष की आयु तक ये यदा-कदा बीमार अवश्य पड़ते रहे किन्तु रुग्णता की स्थिति साधारण रही। ये रोग किस प्रकार के थे इसका उल्लेख करते हुए 'अर्जपत्रिका' में उन्हें 'बात' 'शीत' तथा ज्वर' बताया गया है। इनमें ज्वर तो फसली होने से शीघ्र ठीक हो गया होगा किन्तु 'बात' और 'शीत' स्थायी व्याधि के रूप में, 'रोग पराजय' के रचनाकाल, सं० १९४१, तक चलते रहे।

बनादास जी रोगजनित कष्ट को प्रारब्ध की देन मानते हुए सहर्ष अंगीकार करने के पक्षधर थे। इतना ही नहीं वे उसे विषयासक्त जीव को ईश्वरोन्मुख करने के लिए भगवान का एक कल्याणकारी विधान मानते थे—

ईश्वर छोरैं जाहि को तासु पुत्र धन लेयँ।
औ डारैं अपमान करि रोग वृद्धि कै देयँ॥
रोग वृद्धि कै देयँ रहै नहिं कोई आसा।
लोग निरादर करैं हृदय महँ होय प्रकासा॥
यहि विधि लावैं सरन निज रहै कमल पद सेय।
ईश्वर छोरैं जाहि को तासु पुत्र धन लेयँ॥

किन्तु रोगों का प्रकोप होने पर साधना में बाधा पड़ती थी। इससे उन्हें हार्दिक दुःख होना था।

भजन में भंग करत है रोग।
तन अति छीन मलिन मुख काहे मोंहि पूछत सब लोग।
सरनागत हौं सिय रघुबर के भोगत संचित भोग॥
भाखत मोंहि लाज अति लागत नहिं कछु कहने जोग।
बात तुह्मारि सोच ताते हरु 'बनादास' तन सोग॥

सं० १९३१ में पुराने रोगों का भीषण आक्रमण हुआ। शरीर पहले से ही व्याधिजर्जर था। ढलती हुई आयु में वह शय्याग्रस्त हो गया और असह्य पीड़ा से दिनोंदिन सूखने लगा। इस क्षुद्र स्वार्थ के लिए आराध्य को कष्ट देना अनुचित समझ कर उन्होंने आड़े दिनों में भक्तों के सहायक उनके दूत हनुमान का स्मरण किया—

नाती पूत परिवार नाहिं तव द्वार परे,
रच्छा कौन करै अब अर्ध बैस गई है।
हारे पै सतावै बनादास बात सीत मोंहि,
राम कामदार तुही काहे बार लई है॥

उनका दृढ़ विश्वास था कि वायुपुत्र वातशीत जनित उनके शरीर की सारी पीड़ा दूर कर देंगे—

बाई सीत आई बहुकाल ते कृपाल कपि,
करै भंग भजन में नितहि बार बार है।
हाथ, मुंह, पेट पीर गोड़, मूड़ दुख आँखि,
कान नाक पीरा को हरत हनुमान है॥

अनेक प्रकार के दैहिक, दैविक तथा भौतिक कष्ट सहन कर पवनपुत्र की असीम शक्ति से परिचित होते हुए भी अब तक इन्होंने उनसे किसी प्रकार की सहायता की याचना नहीं की थी। उसे ये आड़े दिनों के लिए बचाए हुए थे। अब वह समय आ गया था। 'बजरंग विजय' में इन्होंने रोगशमन हेतु उनकी विरुदावली का आन्तरिक निष्ठा से गान किया—

मोहि सुठि आस है भरोस कपिराज तव,
आये राम सरन तबहि ते न नई है।
जाँचे नाहिं कबहीं बचाये दिन गाढ़े हेत,
बाढ़े हथियार करै समै पर सई है॥

इस ग्रंथ के कई छंदों में गोस्वामी तुलसीदास के 'हनुमान-बाहुक' की भांति, सीता के द्वेष से उनके दास को मर्मान्तक पीड़ा देने वाली वात-शीत रूपधारी राक्षसियों को अपनी पूंछ में लपेटकर समुद्र में डुबाने की हनुमान से प्रार्थना की गई है।

प्रस्तुत संदर्भ में यह ध्यातव्य है कि असह्य वेदना सहते हुए भी बनादास जी ने रोगमुक्ति के लिए न तो तांत्रिकों और पंडितों की सहायता ली न वैद्यों के ही दरवाजे खटखटाए। सब प्रकार से उपायशून्य होकर वे नामजप में लीन रहे। उनके विचार से समस्त रोगों की वही महौषधि थी—

मंत्र जंत्र तंत्र जरी बूटी न दवाई जानौं,
वैद द्वार जात न उपाय सब तजे हैं।
साधन न दूसर सपन मांहि जानौं कोई,
करम वचन मन रामनाम भजे हैं॥

अंततः बनादास जी की प्रार्थना स्वीकृत हुई और हनुमत्कृपा से वे पूर्णतया स्वस्थ हो गये। 'बजरंग विजय' के अंत में उन्होंने इसका स्पष्ट उल्लेख किया है—

सुअन प्रभंजन पराक्रम प्रकासनिधि,
कुसल सकल विधि जानत जहान है।
'बनादास' पीर को हरत नाहिं बार लाये,
जै जै कार करै कपि करुनानिधान है।

प्रेममार्ग की यह एक विलक्षणता है कि अपनी निष्ठा एवं विश्वास के अनुपात से प्रेमी को प्रेमास्पद से मात्र उलाहना देने का नहीं, लड़ने झगड़ने का भी अधिकार प्राप्त हो जाता है। बनादास जी ने इस व्यवस्था का पूरा लाभ उठाते हुए शारीरिक कष्ट के असह्य होने और सहायता में देरी होने पर अपने खरे स्वभाव के कारण 'हनुमान' को मीठी फटकार सुनाई है—

सोवै हनुनान की गुमान किये बैठो कहूँ,
कैधौं मम हेत ऐंठो करत न कान है।
कैधौं वृद्ध भयो कैधौं बल कहूँ छीनि गयो,
कैधौं हिय हारे कछु परत न जान है॥
कैधौं हैं समाधि में उपाधि कैधौं परी कोई,
कैधौं भांजी पारै कोई कैसन अयान है।
बनादास लघु बात लागि साधु दुख पावै,
गये समो स्वाद कौन करुनानिधान है॥

'बजरंग विजय' की समाप्ति, अधिक आषाढ़ शुक्ल ८, सं० १९३९ को हुई। इसके बाद 'हनुमंत विजय' के निर्माण काल, आषाढ़ शुक्ल ६, सं० १९४०, तक के मध्यवर्तीकाल में लिखित उनकी कृतियों में बीमारी का कोई संकेत नहीं मिलता।

२. हनुमंत विजय

अपनी व्याधियों की शान्ति के लिये 'बजरंग विजय' के लगभग एक वर्ष बाद लिखी गई बनादास जी की यह दूसरी कृति है।

ऐसा प्रतीत होता है कि सं० १९४० के आरम्भ में ही बनादास जी की वात-शीत की पुरानी बीमारीयाँ पुनः उभड़ आईं। इस बार दैहिक के साथ ही दैविक और भौतिक आपत्तियों का भी इन्हें सामना करना पड़ा। दैविक और भौतिक कष्ट क्या थे, इसके प्रमाण अभी तक प्राप्त नहीं हो सके हैं—

दैहिक दैविक भौतिकौ, तपत एक ही बार।
खरो खोट रघुनाथ को, और न दूजो द्वार॥

त्रिविध तापों से शरीर क्षीण और मन संशय, चिंता एवं ग्लानि से ग्रस्त हो गया। इससे साधना में व्यवधान होना स्वाभाविक था—

बिना उतसाह उर भजन बनत नांहि,
सोच औ संदेह ते सुखात जात गात है।
चिंता के भये लै गर्भ गये ते मनहु भला,
साधु के गलानि हिय अति लघु बात है॥

किन्तु इस दशा में भी उनके हृदय में प्रतिष्ठित राम की अनन्य भक्ति पूर्ववत् बनी ही नहीं रही प्रत्युत और भी परिपक्व हो गई—

सहौं असित अपमान उजुर नांहि करौं जन्म भरि।
नाना संकट सहौं राम नांहि सकैं हृदै टरि॥
यही बड़ो अभिलाख लाख भाषत करि सौंहैं।
बढ़ै रामपद प्रीति रहौं किन नर्क परोहैं॥
'बनादास' सतिभाव बात हिय की यह राखो।
सर्व सह्यारै राम काम हनुमत करि साखी॥

'हनुमंत विजय' की समाप्ति पर पहले की भाँति पुनः रोगों का प्रकोप शान्त हो गया। अपने इस प्रार्थना पत्र पर हनुमान जी का हस्ताक्षर प्राप्त कर बनादास को अपार आनन्द हुआ—

यह दसखत हनुमान को मानत है मन ठीक।
भये ग्रन्थ पूरन भयो ताते अतिसै नीक॥

ताते अतिसै नीक लीक पाहन पै खांची।
टरिहै नहिं कोउ भाँति बात ऐसी यह सांची॥
'बनादास' अतिसै सुखी राम बिना सब फीक।
यह दसखत हनुमान को मानत है मन ठीक॥

३. रोग पराजय

रोग शमन के निमित्त रामदूत हनुमान की सेवा में प्रस्तुत आवेदन पत्रों की शृंखला में बनादास जी की यह अन्तिम कृति है।

'हनुमंत विजय' की रचना के एक वर्ष बाद वे पुनः रोग ग्रस्त हो गये थे। अब की बार बात शीत के साथ ऊर्ध्ववायु और बवासीर का भी आक्रमण हुआ। कई वर्षों तक निरंतर बीमारी से परेशान रहने के कारण उन्होंने सभी रोगों को इष्टदेव की कृपा से समूल नष्ट करने के उद्देश्य से 'रोग पराजय' की रचना का संकल्प किया—

रहै रोग की रुहि जौ तौ धिक्क मेरा वाक।
बात सीत आदिक प्रबल मानहु संभु पिनाक॥
मानहु संभु पिनाक बिना रघुवर को भंजै।
'बनादास' बलहीन कृपाबल दारिद गंजै॥
बानी पूरन परैगी ज्यों विरंचि को आँक।
रहै रोग की रुहि जौ तौ धिक मेरा वाक॥

इसके पूर्व बीमार होने पर जब कभी इन्होंने हनुमान जी का स्मरण किया तो कुछ समय के लिये रोग शांत हो जाते किन्तु अवसर पाकर वे पुनः उभर आते थे। इस बार इन्होंने आराध्य राम का भाइयों तथा सेवक हनुमान सहित बड़ी तैयारी तथा अगाध आस्था के साथ आह्वान किया। बनादास जी का अपना साक्ष्य है कि 'रघुनाथ' जी के कृपाकटाक्ष तथा तीनों भाइयों के सहयोग से उनके त्रिविध रोग क्षण मात्र में नष्ट हो गये। वे पुनः जीवित होकर इनको कष्ट न दे सकें, इस हेतु आराध्य ने हनुमान जी का स्थायी पहरा बैठा दिया—

तनरोग मनरोग भवरोग दूरि भागे,
लागे सूल सत्रु न एकौ बचै जोग है।
लौनासुर माफिक निपात कियो बाँको बीर,
प्रिय रघुवीर हते तिहूँ ताप भोग है॥
'बनादास' जालिम हुकुम रघुनाथ जू को,
अब आवै लायक न गये सब रोग है।

बखतर सर्व अंग जंग करि सकै कौन,
दीन दुख दारिद सिया को नियोग है ॥

• • •

रुचि रूरि लखन की भरत की रजाय भई,
भागि भूरि जागी मोर रिपुदौन बीर है ।
'बनादास' आनंद न सकत समाय उर,
रहे डाँड़े गये आवै सपने न पीर है ॥

बनादास जी की शारीरिक व्याधियों का नाश पार्षदों सहित श्री सीताराम की कृपा और उनकी अपनी योगशक्ति अथवा तपोबल से हुआ, इसका प्रचार होने पर लोगों में रामोपासना के प्रति आकर्षण बढ़ेगा और उन्हें रोगग्रस्त देखकर उपास्य की निन्दा करने वालों को पश्चात्ताप होगा, बनादास जी के लिए यह परम संतोष की बात थी—

भयो रोग निर्मूल अब, जानि ईस अनुकूल ।
बनादास आनन्द अति, बिगरो बैठो तूल ॥
बिगरो बैठो तूल भूल मिटिहै सब केरी ।
देखिहैं देह निरोग जोग महिमा हिय हेरी ॥
तब निंदा करिहै कवन राम श्रवन जनु सूल ।
भयो रोग निर्मूल अब जानि ईस अनुकूल ॥

अपने पूर्ण रूप से रोगमुक्त होने की तिथि उन्होंने भाद्र कृष्ण १०, सं० १९४१ (१२९२ फसली) बताई हैं ।

सम्वत् नौ सै सहस है पुनि यकतालिस साल ।
सन् बारह सै बान्नबे रोगहि खायो काल ॥
दूरि भयो सब सूल असित भादों है दसमी ।
भाषत पोढ़ी पैज सत्ति बातैं हैं कसमी ॥

'रोग पराजय' बनादास जी का अंतिम ग्रंथ है । इसके बाद वे लगभग आठ वर्ष और धराधाम में विद्यमान रहे । किंतु इस अवधि में उनके अस्वस्थ होने के बाह्य अथवा अंतः साक्ष्य नहीं मिलते । जीवन के अंतिम क्षणों तक वे निर्बाध रूप से अध्यात्मसाधना में लीन रहे । उनका देहावसान चैत्र शुक्ला सप्तमी सं० १९४९ को आराध्य की लोकावतरण तिथि श्रीरामनवमी से दो दिन पूर्व हुआ । उनका पार्थिव शरीर उसी दिन संत महात्माओं के एक विशाल समूह की उपस्थिति में माता सरयू को अर्पित हो गया ।

अपनी 'रामधाम-यात्रा' की आनंदमयी कल्पना का दृश्य वे इस घटना के १८ वर्ष पूर्व ही 'उभय प्रबोधक रामायण' में अंकित कर चुके थे—

कुहम औ काग स्वान मीन औ सृगाल गीध,
सरजू के जल में कलह करि करि कब खाहिंगे ॥
अति ही भुखाहिं औ हुवाहिं मेरी देखी देखा,
एकन ते एक छीनि छीनि लै जाहिंगे ॥
'बनादास' ऐहै कब मेरो दिन भागि वाला,
काल कलिकाल जमराज पछितांहिंगे।
बैठे विमान पै निसान को बजावैं देव,
फिरि फिरि तनदसा देखि रामधाम जाहिंगे ॥

• • •

मुरछल को करैं सुर कर ते सिर बार बार,
अस्तुति रघुनाथ जी की श्रवण में सुनावहिंगे ॥
सरजू, अयोध्या, संत, गुरु, नाम महिमा को,
आनंद उर उमँगि प्रेम विह्वल कब गावहिंगे ॥
संचित प्रारब्ध को अमान कर्म फूँकि सबहिं,
बिघनन सिर पाँव दाबि रामधाम धावहिंगे ॥

इस प्रकार बनादास जी की अपने जीवन की सबसे बड़ी साध पूरी हुई—

है मेरो याहो मतो, जो पुरवैं रघुबीर।
जियौं नाम रटि अवध में, मरौं तौ सरजू तीर ॥

कहना न होगा कि इसमें श्रीरामकृपा के अतिरिक्त उनके असाध्य साधक अनुचर हनुमान की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। संकटग्रस्त बनादास जी को समय समय पर सहायता करके उन्होंने ही इनके कठोर साधनामय जीवन की नौका पार लगाई थी। इस जीवनव्यापी अनुभव के आधार ही बनादास जी ने अपने स्वप्नगुरु गोस्वामी तुलसीदास का अनुसरण करते हुये विपत्तिकाल में भक्तों को विघ्नहरण हनुमान की शरणागति ग्रहण करने की प्रेरणा दी है।

'संकटमोचन विरुदावली' में संकलित तीनों ग्रन्थ भक्तों के लिए अभीष्टप्रद है। इनमें 'हनूमंत विजय' अनुष्ठानात्मक रचना है। बनादास जी ने उसकी एकादश आवृत्ति (११ पाठ) दुःखदोष नाशक और उसमें निर्दिष्ट हनुमान मंत्र 'ॐ अंजनीनंदनाय फट् स्वाहा' का सवा लक्ष जप सर्वकामनाप्रद बताया है। सिद्ध संत के ये वचन विश्वासी सुजनों के लिए भुक्तिमुक्ति-साधक बनेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं।

कार्तिक पूर्णिमा, सं० २०४७
'भवहरण कुञ्ज' अयोध्या

भगवती प्रसाद सिंह

विषयानुक्रम

ग्रंथ	पृष्ठ
१. बजरंग विजय	१ ३२
२. हनुमंत विजय	३३-४४
३. रोग पराजय	४५ ५२

बजरंग बिजय

श्रीरामजानकी चरन कमलेभ्यो नमः ॥

अथ बजरंग-बिजै ग्रन्थ लिख्यते

छप्पै

बामदेव अवतार राम के कारज हेता।
करम बचन प्रभुदास पवनसुत ऊरध रेता॥
बिस्व-बिभौ-बैराग राम अनुराग रँगीले।
ज्ञान अवर बिज्ञान बोधनिधि सुठि बलसीले॥
सूर सिरोमनि सीलनिधि पवनतनय धुर धीर हैं।
कह 'बनादास' कबि बिदुसबर गुननिधि सुअन समीर हैं॥ ५॥

करम बचन मन सेउ सदा समरथ हनुमाना।
जाको बिरद बिसाल बखानत बेद पुराना॥
रिनी राम सिय लखन भरत रिपुसूदन बीरा।
भक्त सिरोमनि परम जानिये सुअन समीरा॥
गाढ़ परे अवराधिये, सद्य सकल संकट हरन।
कह 'बनादास' बजरंग निति, कलप बिटप असरन सरन॥ ६॥

पन्नग ज्यौं खग केतु बाज जिमि लवा पछारै।
करिहि दलै मृगराज भेड़िया बृक जस मारै॥
मूस भखै मंजार कालिका महिष संघारै।
ज्यौं बक मछरी खात नेक लावत नहिं बारै॥
राम हने रावन जथा, अरु अगस्ति सागर पियौ।
कह 'बनादास' मम पीर तिमि, हनिवत हरत न देर कियौ॥ ७॥

सवैया

पाप हरै तिहूँ ताप हरै भवदाप मिटावन को कपि कारन।
बेगि गरीब ढवार करै अरु दारिदता दुख दारुन जारन॥
है हनुमान सुभाव सनातन गाढ़ परे नहिं लावत बार न।
'दासबना' बरदानि सिरोमनि को बरनै गुन पावत पार न॥ ८॥

राम गुलाम गरीब नेवाज घटै परकाज सनातन रीती।
बीर महा बजरंगबली कबहीं नहिं भावति जाहि अनीती॥
निर्भर प्रेम सदा प्रभु पायन रामहि नाम की जाहि प्रतीती।
'दासबना' बसि इंद्री सदा मन जासन कोउ न पावत जीती॥ ९॥

छप्पै

बीर महाधुर धीर पीर पर जानत नीके।
हैं खल को सुठि काल गाल फारतु हैं छींके॥
मारतंड सत तेज तिहूँपुर फिरत दोहाई।
हनौमान अवराधि कवन अभिमत नहिं पाई॥
जुग-जुग जागत बिसदजस, निति नूतन दुति चंद से।
कह 'बनादास' कपि से बिमुख, है अति ही मति मंद से॥१०॥

घनाक्षरी

बाँकी बिरदावली हठीले हनुमान तव,
घाव दिये रावन को करि पुर छार है।
सिंघिका सँघारि बेगि सुरसा पछारि डारे,
लंकिनी पै किये कोपि मुष्टिका प्रहार है॥
राम के रँगीले बजरंग बीर अछै मारि,
बाटिका उजारि सिया सद्य सोच पार है।
'बनादास' काम कीजे बामदेव अवतार,
करत पुकार द्वार आजु भौमवार है॥ ११॥

भारी-भारी बीर मारि मेघनाद को पछारि,
पौरि-पौरि दौरि जारि उतपात करी है।
खाक किये लंक निहिसंक तू समीर सुत,
महाअहदंक मचो सबै सूझि परी है॥
बहुरि नदीस नाघि आयौ है कपि सैन,
चैन पाय सकल पयान सद्य करी है।
'बनादास' जानकी कुसल कहे राम पास,
मेरी आस पूजै आजु मंगर को घरी है॥ १२॥

लात मारे रावन सतावन सकल लोक,
घात किये घननाद कुम्भकर्न बीर है।

सयन समूह चीरि फारि चोपि चूर किये,
केते सिंधु बोरि डारे सुअन समीर है ।।
कालनेमि मारि लायौ कुधर उपारि राखे,
लखन को प्रान लोक बेद में लकीर है ।
आजु भौमवार कपि द्वार पै पुकार करौं,
लाइये न बार हरो 'बनादास' पीर है ।। १३ ।।

बालि बध हेत सिंधु सेत बाँधे कपिनाथ,
गुनगाथ अगम न पार कोउ पाये हैं ।
पैठि कै पताल गाल फारि महिरावन को,
लाये राम लखन अनंद अधिकाये हैं ।।
रघुनाथ कुसल सुनाये बेगि भरत को,
बिरह पयोधि काढ़ि मृतक जिआये हैं ।
'बनादास' करत सहाय रामदासन की,
सरम सरीक हेत सद्य उठि धाये हैं ।। १४ ।।

विद्या बेद ब्याकरन निपुन बेदांत सास्त्र,
गान गुन गंधरब कोटि हनुमान हैं ।
राम नाम गति मति उपमा न दूजो आन,
सील के निधान सुनि साहेब सुजान हैं ।।
राजनीति कुसल कृपाल औधराज दिये,
'बनादास' मेरी बिनै सद्य सुनौ कान है ।
सरम सरीक को समीर सुत तू ही एक,
रामदास हेत तीनि काल में न आन है ।। १५ ।।

राखु लाज अंजनी किसोर बरजोर बेगि,
साँचु की सरम जात तेरो न धरम है ।
राम के दुलारे प्रान प्यारे सिय लखन के,
जानो कपिराज घट-घट के मरम हैं ।।
'बनादास' सोच उर होत बार-बार बहु,
थोरे काज लागि बात परत नरम है ।
सत्य कहौं जानैं राम धाम औध बास दिये,
गाढ़ परे मेरे बंधु तो सो न परम है ।। १६ ।।

सवैया

हौ हनुमान महाबल आकर साकर में सुठि होत सहाई।
नाघि समुद्र सिया सुधि लायौ है लछमन को कपि बेगि जिआई॥
राम के काम किये हठ कोटिन तू रन हेत बिजै बरदाई।
'दासबना' दिये औध अनंद हमारिहिं बार को बेर लगाई॥ १७॥

घनाक्षरी

स्वान करै चोरी गारी साहेब के सीस परै,
येही सोच बीस बिस्वा मोहिं कपिराज है।
निंदा ह्वैहै भेष की अलेख है प्रभाव जाको,
समुझि-समुझि उर आवै अति लाज है॥
किंकर अगस्ति कर गोखुर में डूबो जात,
अछत समीर सुत अैसन अकाज है।
'बनादास' बादसाह सुत दुखी दाना ह्वै को,
कहत सुनत अस बनत न आज है॥ १८॥

सोवै हनुमान, की गुमान किये बैठे कहूँ,
कैधौं मम हेत अैंठो करत न कान है।
कैधौं वृद्ध भयौ कैधौं बल कहीं छीनि गयौ,
कैधौं हिय हारे कछु परत न जान है॥
कैधौं हैं समाधि में उपाधि कैधौं परी कोई,
कैधौं भाँजी पारै कोउ कैसन अयान है।
'बनादास' लघु बात लागि साधु दुख पावै,
गये समौ स्वाद कौन करुनानिधान है॥ १९॥

प्रवल पराक्रम प्रताप मारतंड सत,
महाबीर महिमा प्रताप स्तुति गाये हैं।
बालकेलि लीले रबि पबि सम हनु थल,
बज्र चोट चूर किये उपमा न पाये हैं॥
डरत दिवाकर प्रभात को प्रकास निधि,
नाटक निपुन राम नाम लव लाये हैं।
'बनादास' देव बंदीछोर तू बरोर कपि,
मेरी बार काहे अब बार को लगाये हैं॥ २०॥

वज्र नख दसन असन किये मारतंड,
महाबीर बरिबंड कपि केसरी किसोर हैं।
कनक कुधर से अकार है तरुन तन,
खल बन दहन कृसानु बरजोर हैं॥
पिंगल नयन अति भृकुटी कराल क्रूर,
आरत हरन जन अतिही बरोर हैं।
'बनादास' काम हेत काहे कपि बार लाये,
सुजस सघन सुठि बल मोहिं तोर है॥ २१॥

सिया के दुलारे राम प्रानहूँ ते प्यारे,
संत रखवारे तिहुँ पुर माहिं सोर है।
कृपा कोर चाहैं सुर नायक सकल देव,
बुद्धि में बिनायक बृहद बंदी छोर है॥
अगम अगाध गुन पार कोउ पावै नाहिं,
गावै कबि कोबिद बिदित सब ओर है।
कबि कुल तिलक त्रिलोक में न तुल्य कोऊ,
'बनादास' मेरी वोर काहे सुधि भोर है॥ २२॥

लोकपाल दिगपाल सुरपाल सहमत,
हाँक हनुमान सुनि कम्प दससीस है।
ईस अवतार भुअभार के हरन हेत,
चरन सरन चाहैं जोगी मुनि ईस है॥
कोविद कबीस्वर कुटिल काल बलवान,
तेज को निधान कवि साधु बिस्वा बीस है।
संतन के सहायक अलायक को अवलंम,
'बनादास' काज कीजे दीजे बकसीस है॥ २३॥

वेद बिरदावली विदित निति नई होति,
जागत जहान में सुजस कपिराज को।
राम काम हेत अवतार सुत मारुत को,
खल लवा ऊपर झपेट जस बाज को॥
नारद गनेस सेस सारद बखान करैं,
डरैं तिहु लोक हनुमान मृगराज को।

बार-बार करत पुकार द्वार 'बनादास',
बिना काज भये मन पावै अति लाज को ॥ २४ ॥

राजा बादसाह सुर सबै फिरिआदि सुनै,
मातु पितु हाकिम हरखि दादि देत है।
द्वार परा भोर ते कठोर कोऊ कैसो होय,
साँझ समै आये पर सोऊ सुधि लेत है॥
तेरे दरबार में बिसेषि न अबेर लागै,
काहे कपिराज मेरी वोर ते अचेत है।
जैसे सुत पिता ते अरत चहै लेत सोई,
अैसे 'बनादास' लेहै तोहि कै सचेत है॥ २५ ॥

एक बेर मंगन को सबै सुख मानि देत,
राखु मेरी कानि कपि रामदास जानि कै।
कबही न जाँचे रघुनाथ छोड़ि और द्वार,
आये तेरी वोर सनबंध निज मानि कै॥
पेरक की पेरना समुझि उर माहि सुखी,
रोज को मँगैआ नाहिं दीजे पहिचान कै।
'बनादास' मंगन हौं मानी कौसलेस ही को,
राखि कछु कहौं कपि लीजिए पिछानि कै॥ २६ ॥

सवैया

मुखिआ उपदेश बिभीषन को दुखिआ कपि जानि कै ताहि उबारे।
रावन लात प्रहारे जबै तुअ वाक्य कै आदि तुरंत सिधारे॥
राम कृपाल किये अति आदर जन्म अनेकन के अघ जारे।
'दासबना' दिये लंक को राज समै तेहि देवन जैति पुकारे॥ २७॥

जैति हवाल कहे प्रति जानकी आनँद नीर विलोचन ढारे॥
लाये सिया पुनि जान चढ़ाय के राम कृपाल हिये सुख भारे।
'दासबना' अति ताजुब आवत कारन कौन जो मोहिं बिसारे॥ २८॥

रावन जज्ञ बिध्वंस किये पुनि तासु हिये बिच लात प्रहारे।
साँसति नारि कि देखि उठो सठ राम के बान भयो जर छारे॥
काज अनेक में कारन तू प्रभु पास नहीं तुमते अधिकारे।
'दासबना' अति ताजुब आवत कारन कौन जो मोहिं बिसारे॥ २९॥

मर्दन कै घननाद कपीस किये मख खीस समीर दुलारे।
संग सहायक लछमन के तब तच्छन ही सुत रावन मारे॥
है जस पावन तू कपिराजन सावन निस्चर के कुल सारे।
'दासबना' अति ताजुब आवत कारन कौन जो मोहि बिसारे॥ ३० ॥

बंधु परे जबहीं रन घायल राघव आरत बैन उचारे।
धीर रह्यौ न समै तेहि सैन में जाय सुखेन को भौन उखारे॥
लै गिरि आयौ समेति सजीवनि तू सकती कर तेज नेवारे।
'दासबना' अति ताजुब आवत कारन कौन जो मोहिं बिसारे॥ ३१ ॥

जानकी सोच बेहाल कृपाल तौ गाल में मुद्रिका मेलि सिधारे।
सिंघिका मारि हते सुरसा बल नाघि समुद्र बली पुर जारे॥
बाग उजारि संघारि अछै कपि सीय सती कर सोच नेवारे।
'दासबना' अति ताजुब आवत कारन कौन जो मोहिं बिसारे॥ ३२ ॥

हौ महारावन हेतु नसावन ईस सो जुद्धि मचावन हारे।
काज किये बाजिमेध में वीर सजीवनि लाइकै सैनि उबारे॥
औध नेवासी उदासी हरे करे कोटिन काज समीर दुलारे।
'दासबना' अति ताजुब आवत कारन कौन जो मोहिं बिसारे॥ ३३ ॥

घनाक्षरी

जाचौ देव पितर न राजा बादसाह कोऊ,
बरुन कुबेर नाहि दस दिगपाल है।
मानत न जमकाल मृतु की हवाल कौनि,
द्वार कौसलेस परा नर कौ नमाल है॥
मालिक को काम करै सेवक सेवाय कौन,
राम रुख पाय कै सुनाये कपि हाल है।
'वनादास' मारुत सुअन नाहि देर लावौ,
काम राम किंकर को करो ततकाल है॥ ३४ ॥

जागै जुग-जुग हनुमान जस तेरो नवा,
मेरो काम करो सुठि साहेब सुजान हौ।
उर की हवाल वलि जानै कौन तोहि बिन,
मह्रू राम हाथ विन दाम ही बिकान हौं॥

पद प्रेमप्रन चाहौ तौ बिन निबाहै कौन,
पहिल उसीला तु ही साधु को ठेकान है।
'बनादास' बिगरी सुधारो कपिराज नित,
चित जनि चूक धरो करुनानिधान हौ ॥ ३५ ॥

बाई सीत आई बहुकाल ते कृपाल कपि,
करै भंग भजन में बहु बार-बार है।
तुम बिन हरैआ कौन बलीबीर हनुमान,
नाहिन निहोरे दुख सहे निराधार है ॥
जैसे हने लंकिनी हठीले महाबीर कोपि,
सिंघिका संघारे त्यौंही कीजे जर छार है।
'बनादास' अब तव द्वार मैं पुकार करै,
सकल उपाय आस छोड़ कै बिचार है ॥ ३६ ॥

आपु के निहोरे बिना येतो दिन सहे दुख,
अब कपिराज जरि मूरि से उखारिये।
सोई अहै राछसी जो दिये खेद जानकी को,
सेवक सिया की जानि देत कष्ट न्यारिये ॥
पापिनी परम न नरम परै कोऊ काल,
करत बेहाल मोहिं ताते बेगि मारिये।
'बनादास' अब हनुमान न बिलम्म लाउ,
सब दिसि हारि सुत मारुत पुकारिये ॥ ३७ ॥

मकरी समान मारु बाई को मरोरि बेगि,
सुरसा सरिस सीत सद्यहो पछारिये।
लूम से लपेटि कै पटकु हनुमान बीर,
चीरि फारि चूर कै बिसेषि सो बिदारिये ॥
भजन बिचार में खँभार करै 'बनादास',
ताते हाँक दैकै सुत पवन पुकारिये।
मानि सनबंध श्री गोसाई को न देर करो,
रावन की नानी दोऊ महाबीर मारिये ॥ ३८ ॥

पूतना पिसाच भूत प्रेत हनुमान हनै,
महामारी घोर को नेवारत न बार है।

जूड़ी ताप नाना ज्वर रोग सोग नास करै,
कृत्तिआ कराल कोपि करै जर छार है ॥
दारिद बिदारन उबारन गरीब सदा,
बिरद बिराजत अधार निराधार है।
'बनादास' काहे मेरी बार को अबेर लाये,
जनम प्रजंत नहीं जाँचे तव द्वार है ॥ ३९ ॥

रावन की नानी बाई सीत जानि साँचु करि,
महा अभिमानी न टरत कोउ काल है।
बिबिधि उपाय करि हारि तव द्वार जाँचे,
मारुत सुअन सुनि सुजस बिसाल है ॥
तोसे बली कोऊ तिहुँ काल न देखाई देत,
तिहुँ लोक माहिं कपि सबसे बिसाल है।
'बनादास' मारु दोउ पापिनी पछारि सद्य,
जैसे पितु रच्छा करै बेगि निजु बाल है ॥ ४० ॥

हाथ मुँह पेट पीर पीठि गोड़ मूड़ दुख,
आँखि कान पीरा को हरत हनुमान है।
रोम-रोम सकल कलेस को न लेस रहै,
बार-बार बदत दोहाई बलवान है।
केसरी किसोर कर्म संचित को फूँकि देत,
परारब्ध कुअमान नासत प्रमान है।
'बनादास' गाढ परे सुमिरु समीर सुत,
गाहक गरीब सुठि साहेब सुजान है ॥ ४१ ॥

बाँको बंदीछोर बीर बैरी को बिदारि डारै,
हरै रुज सकल अमंगल अगार है।
कामना सकल देत कलप बिटप सम,
रामदास रच्छा हेत जाको अवतार है ॥
सब गुनधाम रामसेवक कृपाल कपि,
रिनी रघुनाथ सीय सुजस अपार है।
'बनादास' हेत काहे ह्वै रहे कृपिणितर,
सीत बाई सद्य कपि करो जर छार है ॥ ४२ ॥

मोहिं सुठि आस है भरोस कपिराज तव,
आये राम सरन तबहिं ते न नई है।
जाँचे नाहिं कबहिं बचाये दिन गाढ़े हेत,
बाढ़े हथिआर करैं समै पैसई है॥
नाती पूत परिवार नाहिं तव द्वार परे,
रच्छा अब करैं कौन अर्ध बैस गई है।
हारे पै सतावै 'बनादास' बात सीत मोहिं,
राम कामदार तुही काहे बार लई है॥ ४३॥

मेरी को खबरि लेय नातौ कौन काहि सन,
राम की गुमान मोहिं मानत न काहु को।
देवता पितर बिधि इन्द्र रुद्र द्वार तजे,
सूर ससि गन राउसो न है निबाहु को॥
राजा बादसाह साहु सेठि न निहोरौं कोऊ,
देह सनबंधी को सपन में न चाहु को।
मन बच करम मरम 'बनादास' कहै,
जागत औ सोवत गुलाम राम साहु को॥ ४४॥

राम को देवान तू कपीस कुलि बातन को,
मेरी को खबरि लेय तोहि छाड़ि आन है।
राम तजि दूजी गति मन में न काल कोई,
राखि कहौं गिरै जीभ जानत सुजान है॥
कपट न चलै उरबासी से कदपिकाल,
कौसल कृपाल सुठि करुना निधान है।
मन सठ हठ परा सदा येहि द्वार पर,
'बनादास' अब होन चहत निदान है॥ ४५॥

बातजात जन को सुखात गात दिन प्रति,
हरखात बाई सीत राछसी निपटि है।
रोखि कै कषाय दृग कोपि कपि कटकटाय,
लूम को लफाय घाय मारिये झपटि है॥
जाही भाँति सिंघिका संघारे हनुमान बीर,
मकरी बिदारे तिमि मारिये रपटि है।

'बनादास' सुरसा को मुष्टिका प्रहार जैसे,
कीजे न बिलम्भ तैसे मारिये दपटि है ॥ ४६ ॥

कलि की कुचाल कैधौं करम बिसाल अहै,
कैधौं पाप पूरब को जानि न परतु है।
कैधौं माया ख्याल करै कैधौं बिघ्न देवता को,
कैधौं कोऊ मंत्र जंत्र तंत्र को करतु है ॥
कैधौं जातुधानी रामदास जानि दुख देत,
'बनादास' तू तौ सब आरत हरतु है।
भजन बिचार अनुराग तदाकार होत,
करै बरजोरी मन अति ही डरतु है ॥ ४७ ॥

मंत्र जंत्र तंत्र जरी बूटी न दवाई जानौं,
बैद द्वार जात न उपाय सब तजे हैं।
साधन न दूसर सपन माहिं जानो कोई,
करम बचन मन राम नाम भजे हैं ॥
तीरथ बरत तप जग्य जोग करौं नाहिं,
पूजा पाठ नेम औ अचार सुठि तजे हैं।
'बनादास' ताहू पैं तपत तन ताप करि,
मेरी दिसि राम कपि कौन साज सजे हैं ॥ ४८ ॥

जानते जौ करम बिसाल कलिकाल अहै,
भजते उनहिं काहे सरन को आवते।
आस तोष करन के हेत जो प्रबल देव,
उनहीं की सेवा पूजा करिकै रिझावते ॥
येक निज वीर कै प्रतीति जरै जन्म भरि,
साँकर्यौ न सुनै यह काहू नाहिं भावते।
अैसी रीति समुझि तौ भले नासतीक अहै,
जानते प्रथम तौ न 'बनादास' ध्यावते ॥ ४९ ॥

सुनो हनोमान जू गुमान रह्यौ मोहिं बड़,
तोहि समुझाइ कहौं अैसन न चाहिये।
सुआ कैसो सेइब भो सेमर में भुआ हाथ,
सदा के समीपी तुम प्रीति को निबाहिये ॥

दुख अपमान समै स्वामी न कृपाल होय,
बचन न काम करै बिन आगि दाहिये।
'बनादास' ऐसी रीति देखी सुनी कहूँ नाहिं,
निज जाँघ खोले लाज कहौ काहि काहिये ॥ ५० ॥

राम प्रीति रहै कपि कीजिये उपाय सोई,
सबसे बिसेषि येही सोच तौ बिसाल है।
निज जरे बकै आव-बाव सब कोई जग,
बासता न कहूँ कहौ काहि सन हाल है ॥
ह्वै हैं नासतीक कितौ बेग ही सुधारो बात,
दूजी गति नाहिं बसुजाम कोऊ काल है।
खरौ रामदास हौं न डरौं कोऊ काल ताते,
दीजिये निबाहि 'बनादास' बुधि बाल है ॥ ५१ ॥

कोटि मंत्र कोटि जंत्र कोटि तंत्र सम कपि,
कोटि अस्त्र सस्त्र सम महिमा बिसाल है।
कोटिन कलपतरु सम बरदानि सदा,
रामदास हेतन बनाय यक जाल है ॥
कैधौं कलिकाल लीले तुम्हहिं समीर सुत,
काहे न करत जनकाज बलि हाल है।
'बनादास' आरत ह्वै बके आव-बाव बात,
मारु सीत बात कपि काल हू को काल है ॥ ५२ ॥

राम के गुलामन को कामतरु महाबीर,
बाज से झपेटि सीत लवा को पछारिये।
बात बरजोर करि देत है दुसह दुख,
हनुमान मृगराज ताहि बेगि मारिये ॥
कालनेम घननाद कुम्भकर्न रावन से,
काल कर्म गुन औ सुभाव को सँघारिये।
लोभ मोह त्रास भास 'बनादास' पन्नग से,
कपिराज खग केतु चीरि फारि डारिये ॥ ५३ ॥

मान हने हनुमान तुम ब्याल सूदन को,
इन्द्र को गुमान नासे कपि बरजोर है।

बाल केलि भानु लीले प्रबल प्रताप अति,
अर्जुन पराजै किये केसरी किसोर है॥
बलिभद्र बाटिका उजारत न देर लाये,
किये जदुबंसिन की साँसति बरोर है।
'बनादास' मेरी बार काहे अब हारि रहे,
करम बचन मन बल मोहिं तोर है॥ ५४॥

मानि सनबन्ध महराज को न देर कीजे,
दीजे मनवांछित श्रीराम दास मानिकै।
मन क्रम बचन सपन नाहिं दूजी गति,
जनम बिताये रघुनाथ द्वार जानिकै॥
खरो खोटो बड़ो छोटो रामही को और नाहिं,
लीजिए निबाहि कपि नीके पहिचानि कै।
'बनादास' जाचक बिमुख मति कीजे बीर,
सकल सरीर पीर हरौ कपि भानि कै॥ ५५॥

हाथ पीर गोड़ पीर पेट पीर पीर पीठि,
पीर आँखि कान दाँत पीर हरै हनुमान है।
रोम-रोम सकल सरीर पीर बीर दहै,
परै गाढ़ करै सुत अंजनी को ध्यान है॥
मनपीर बुद्धिपीर चित्तपीर चूर करैं,
हरै पीर सकल दोहाई बलवान है।
बनादास केसरी किसोर बंदी छोर बड़ो,
मोर दुख दूरि करो करुना निधान है॥ ५६॥

दूरि कीजे द्वार ते कि राखिये सुधारि नीके,
खीझे हौ तौ मारौ मन महा कलकानि है।
रीझे हौ तौ दीजे बरदान सावधान सद्य,
लहौं मन भावत तौ मिटत मलानि है॥
करत पुकार द्वार बार बार बार होत,
साहेब न सुनै जिअ अति ही लजानि है।
'बनादास' सबको सुधारि आये कपिराज,
लैहौं निज रुचि मति मेरी मचलानि है॥ ५७॥

साहेब न राम से उसीलो नाहिं तोहि सन,
मोसों न दुसीलो जो बकत आव-बाव है।
जौ तौ कहूँ होतो दूजो ठाकुर ठहर और,
तौ तौ छोड़ि जाते फेरि बेगि वोही ठाँव है॥
सिव विधि इन्द्र सोम सूर गनराउ आदि,
तिहुँ लोक मंगन बसत तेहि गाँव है।
'बनादास' बली है अभागि मेरी भली भाँति,
कौसलेस द्वार आय मिटो न ललाव है॥ ५८॥

सवैया

रच्छा किये कपि अर्जुन को रह्यौ केतु पै भाँति अनेक सचेता।
चूर भयौ दुरजोधन को दल कारन हौ तुमहीं तेहि हेता॥
कोटिन काम किये हनुमान निदान करो हमरे हित येता।
'दासबना' न बिलम्म करो बरदानि सिरोमनि ऊरध रेता॥५९॥

राज देवाय तुहीं कपिराज को साज सजे सब भाँति घनेरे।
सोकित नाहिं दुतीअ सुकंठ से कीन सुखी सुत पौन सबेरे॥
बालि बिदारन को तुम कारन काज सुधारे विभीषन केरे।
'दासबना' बिगरी न बनै बलि कौन हिसाब से लावत देरे॥६०॥

मारुत नन्दन तू जगबन्दन काल निकंदन बेद को बेता।
मौत कि मौत अहौ कपिराज समाज बिषे सब भाँति सचेता॥
आइ घरे बल मेरीहिं बार पुकारत द्वार भये दिन येता।
काहे न कान करो बिनती कह 'दासबना' डुबिहैं स्नुति सेता॥६१॥

घनाक्षरी

कीले कलिकाल तू रँगीले रघुनाथ जू के,
साजे सब साज सठ रावन मरन को।
अमित उपाय किये सेत हेत कपिराय,
लिखे नाम गिरि विधि जलधितरन को॥
'बनादास' दनुज सकुल हने कोप करि,
राम सैन सेनापति डरन जरन को।
अब तौ बिचारि अचरज मोहिं लागै अति,
काहे लाज आवति न अपने सरन को॥ ६२॥

सवैया

ह्वै हैं हँसी जग में हनुमान निदान करो जनि बार हमारे।
मेरी गरीबता तूं न लखैं कपि कै फरिआदि अनेकन हारे॥
दूजो कहूँ अवलम्म नहीं तेहिते बहु बार ते तोहिं पुकारे।
'दासबना' बनि अहैं दिये तुम संतन हेत सदा रखवारे॥६३॥

घनाक्षरी

पंक सम लंक हालै हाँक हनुमान सुनि,
रंक किये रावन को करि पुर छार है।
बाटिका उजारि जातुधान सैन चौथि मारि,
अछ्य संघारि किये सिया सोच पार है॥
पाय कै अभिष्ट बर कपि कृतकृत्त भयौ,
सहज नदोस नाघि सैन सुखी सार है।
'बनादास' कपिराज बाटिका को खाय फल,
जानकी को कुशल सुनाये सरकार है॥ ६४॥

नख वज्र दसन कठोर पिंग नैन रोष,
बालधी बिसाल भुजदंड बरजोर है।
कनक कुधर तन खल बन धूम ध्वज,
रज जातुधान मरि नासक बरोर है॥
रघुनाथ सैन को सिंगार वार अंजनी को,
किलकिला सबद अति महा घनघोर है।
सागर को सेत हेत नागर समीर सुत,
'बनादास' सब भाँति आसतोष मोर है॥ ६५॥

रन केलि कुसल कपीस ज्ञानधाम सुठि,
वामदेव अवतार आरत हरन है।
करम वचन मन साधन सकल त्यागि,
राति दिन एक राम नाम को परन है॥
नाटक निपुन गुन आकर समीर सुत,
सुनि राम जस जल लोचन ढरन है।
पोचन को परिताप सदा जन सोच हरै,
'बनादास' मेरो दुख दुसह दरन है॥ ६६॥

सेइबे को सरन को गाइबे सुमिरिबे को,
राम को देवान हनुमान से न आन हैं।
ज्ञान भक्ति कारन उबारन जगत ज्वर,
तारन तरन कपि करुना निधान हैं॥
आस तोष मोष सुख देत नाहिं देर लागै,
जागै जुग-जुग जस महाबलवान हैं।
'बनादास' पाप परिताप रोग दोष हरैं,
हाजिर हजूर निति परम सुजान हैं॥ ६७॥

राजी राम लखन भरत रिपुदौन सीय,
हिय लेस मान नाहिं किये कोटि काम है।
वेद बिरदावली बिदित बात जात की है,
गावै कवि कोविद अधार राम नाम है॥
रघुनाथ द्वार में न गति हनुमान बिन,
चाहै अधिकारी हो वा सेवैं बसुजाम है।
'बनादास' सबको उसीला है समीर सुत,
लिलहिं समात देत सुठि अभिराम है॥ ६८॥

जीवनि जगत में निदान हनुमान थोरि,
अबलै न खोरि लागि करत बिचार है।
खरो खोटो जैसो तैसो राम ही के वोट बचे,
अब मोट अजस को परै सीस भार है॥
ताही करि चोट लागै सहै न खोटाई लेस,
करत पुकार तातें द्वार बार-बार है।
'बनादास' बिगरी सुधारो सुत पवन बेगि,
सब दिन तुहीं निराधार को अधार है॥ ६९॥

बजरंग बेगि बात सीत अंगभंग करो,
रँगे राम रंग बीच परे ते कहतु हौं।
बली काल करम सरम अति आवै मोहिं,
प्रभु के सरन सुठि साँसति सहतु हौं॥
राम दीन दास के गई बहोरि कपि राज,
भजन अकाज देखि चरन गहतु हौं।

'बनादास' दुसह दवारि कपि दूरि करो,
नाम ही को अवलम्म लिये निबहतु हौं ॥ ७० ॥

तेरो जस गावत पुरान वेद मुनि साधु,
अगम अगाधु कोई पार नहिं पायौ है।
अति अभिलाष उर राखि कै पुकारे तोहिं,
काहे न सुनत कपि बहु बेर भयौ है॥
नूतन बिसद बिरदावली बिदित जग,
अति अचरज मेरी बार ढील लयौ है।
'बनादास' बरखा सुखाने सालि कौन काम,
भूखौ मारि भोजन करावै नीति नयौ है ॥ ७१ ॥

मेरो गुन करनी करम न बिचार करो,
आपनो सरम राखु सुअन समीर है।
उदर भरत रामकिंकर कहाइ निति,
चित्त चारु हेरे नाहिं नाम ही पै भीर है॥
सुभ आचरन को प्रचार करौ बार-बार,
पाप नाम सुनि अति खाँचत लकीर है।
जैसो तैसो राम ही को नित ही कहावत हौं,
बड़ो अवलम्म ताते 'बनादास' धीर है ॥ ७२ ॥

टोना जादू जालिम को जारि डारैं हनुमान,
डीठि मूठि पीठि लाइ मारत न देर है।
मंत्र जंत्र तंत्र को हरत हाँक देकै सुठि,
मारन औ मोहन को नासत सबेर है॥
बसीकर्न आदि को न रेख राखैं महाबीर,
बड़ो रनधीर देत अति ही दरेर है।
'बनादास' बाँकुरो समीर सुत सर्नपाल,
लाल अंजनी को करै कूर पै करेर है ॥ ७३ ॥

सवैया

राम गुलाम को काम करो हौं हूँ दाम बिना रघुनाथ को चेरो।
नाम जपों नहिं काम है दूसर आस उपाय को त्याग सबेरो॥

साधन और न धोखेहु जानत हे हनुमान हरो दुख मेरो।
'दासबना' गति दूजी नहीं कपि कारन कौन लगावत देरो॥ ७४॥

घनाक्षरी

रावन की नानी जातुधानी सीत बाई कपि,
महा अभिमानी अति करत करेर है।
बीर बजरंग अंग भंग करि मारु कोपि,
राम की दोहाई अब लाइये न देर है॥
कपि केलि पेलि कै पटकु लूम लपकाय,
अतिहि घुमाय मारु मारिये दरेर है।
'बनादास' आसतोष कीजिये समीर सुत,
मोहिं हाँक देत होत अति ही अबेर है॥ ७५॥

दूजो जल पियै नाहिं स्वाती न खबरि लेय,
कैसे जियै चातक कठिन पेच परी है।
धूरि सम लखै सुरसरि हूँ को बारि सदा,
दूजे जल की हवाल क्यों प्रमान करी है॥
सूखे फूल अधिक बसात है गुलाब कर,
रसरी तजत नाहिं ऐंठन ज्यों जरी है।
'बनादास' अतिहिं अनंद है अनन्यतामें,
समुझि-समुझि उर अँसुअन झरी है॥ ७६॥

बार-बार टेरत न हेरत हमारी ओर,
पेरत करम काल येई बरजोर है।
तेरो नाम लेत ही सुखेत होत ऊसर सो,
दूसर न देखौं कहूँ तोसों कृपा कोर है॥
मेरो बन्दीछोर तूँ निहोर करो बार-बार,
रामदूत मजबूत सबसे बरोर है।
'बनादास' आस पूर करि उर बास करो,
नास करि सीत बाई लूम को मरोर है॥ ७७॥

मारे घननाद को बिदारे कुम्भकर्न आदि,
रावन पछारे केते सुभट संघारै हैं।

चीरि फारि डारे केते सिंधु बोरि डारे,
हनुमान ललकारे कोउ पावत न पारे हैं ॥
कालनेम मारे जाय कुधर उपारे मूरि,
लाय प्रान प्यारे बीर लखन उबारे हैं।
'बनादास' मेरी बार हारे न करत कान,
केसरी किसोर बार-बार ही प्रचारे हैं ॥ ७८ ॥

नाक पीर हाँक हनुमान सुनि राँक होत,
आक पै परत जैसे पावस को नीर है।
भागु-भागु बावरी गँवारी मति देर करै,
आय गयौ धाय अब सुअन समीर हैं ॥
कटकटाय चोपि कै चबैना से चबाय डारे,
मानि ले बचन तोहिं कहत फकीर है।
'बनादास' करत दोहाई कपिराई सुठि,
देर न लगाई नास भई नाक पीर है ॥ ७९ ॥

दाँत पीर बातजात नाम लेत सकुचात,
अतिहिं डेरात सुठि सद्य ही परात है।
आवै न बहोरि जौ करोरिन उपाय करै,
काँपत है गात बार-बार अकुलात है ॥
'बनादास' करत दोहाई के बिलाइ जात,
देर न लगत ज्यौं सुखात तरु पात है।
हाँक हनुमान सुनि गुनि अहदंक होत,
प्रबल प्रताप जरिमूरि सो नसात है ॥ ८० ॥

कान पीर काँपत समीरसुत नाम लेत,
चापत लँगूर ते तरुन बलवान है।
भागैं अकुलाय हाय हाय कै पुकार करै,
डरैं बार-बार होत मृतक समान है ॥
जानि कै निदान नेक नेर हू न आवै कहूँ,
सुनत दुहाई बाँको बीर बलवान है।
'बनादास' नास होत जरिमूरि ते सबेर,
नाम हनुमान ते न रहै पीर कान है ॥ ८१ ॥

पाप बकसीस की कराल बड़ी सीस पीर,
तीर नाहिं आवै नाम सुनत कपीस की।
रावन महल्ला पर हल्ला हनुमान भयो,
सुनि कै डेरात सुधि आवै लंक खीस की॥
'बनादास' भागत न बार लागै पल एक,
जानि कै दोहाई खास दास अवनीस की।
आन बलवान की सपूत सुत अंजनी की करै,
मुख भंजनी जो रहै पीर सीस की॥ ८२॥

करम कुचाल की बिसाल सुठि नैन पीर,
अैन छाँड़ि भागु तूँ बिचारि बात मैन की।
चूर-चूर करैगो लँगूर ते लपेटि तोहिं,
मानु मेरो बनै है अवाई बल पैन की॥
भागी भरभराय अरबराय कै न रुकै पाय,
अति ही डेराय हाल सुनि पति सैन की।
'बनादास' आनि हनुमान कि पिछानि कहै,
दहै वेगि पावक जो रहै पीर नैन की॥ ८३॥

पुरुब कुचाल की बिसाल है करेज पीर,
तीर तजि देत नाम सुनि महावीर की।
भागु-भागु भोंड़ी तूँ निगोड़ी मति देर लाउ,
घाउ परैं सीस पै अनेक रनधीर की॥
चीरि फारि डारै कपि चोपि कै पछारै,
चूर-चूर करि मारै बात मानि ले फकीर की।
'बनादास' गायब ह्वै गई नाहिं देर लाई,
सचही दोहाई सुनि सुअन समीर की॥ ८४॥

उदर की पीर है गंभीर जू समीर सुत,
करत अधीर क्रूर पाप के लपेट को।
जैसे मारे सिंघिका पछारे कपि लंकिनी को,
ऐसेही सकोपि चोट दीजिए चपेट की॥
भागु-भागु मानिकै बचन अब रहै नाहिं,
'बनादास' चेत करु प्रबल झपेट की।

आनि हनुमान की सपूत बलवान की,
दोहाई है अमेट की न रहै पीर पेट की ॥ ८५ ॥

बाँह पीर अवगाह भोंड़ी भोर भागु बेगि,
लाग मेरे कहे राह छाड़ि दे कुचाह की ।
गाल को फुलाय लपकाय लूम मारै देखि,
मरैगी बिसेषि चोट परे कपिनाह की ॥
गई है पराय नाहिं धीरज धराय,
सुधि बुधि बिसराय हाल सुनि लंक दाह की ।
सुनि कै दोहाई हनुमान की अवाई,
'बनादास' गैं नसाई सहजहि पीर बाँह की ॥ ८६ ॥

पीठि पीर पकरि पटकि डारे महावीर,
झपटि-झपटि जैसे लंकिनी पछारे हैं ।
रपटि चपेट चोट मारी है लपेटि लूम,
चूर-चूर भई आहि आहि कै पुकारे हैं ॥
'बनादास' कपि को तमाचा परै जाहि पर,
मरत न देर फिरि धीर कौ सम्हारे हैं ॥
सौंह सुत पौन की दोहाई दुख दौन की
न उठी पीर पीठि की हठीले हठि मारे हैं ॥ ८७ ॥

कमर की पीर अति धीर न धरन देत,
लेत उर्ध साँस जाहि बेगही पछारे हैं ।
वज्र नख दसन असन किये मारतंड,
महाबरिबंड चोपि चीरि फारि डारे हैं ॥
लूम से घुमाय दिये गरद मिलाय,
'बनादास' रुख पाय जै-जै बचन उचारे हैं ।
मेरे रखवारे अंजनी के प्रानप्यारे राम,
जानकी दुलारे कटि पीर कोपि मारे हैं ॥ ८८ ॥

पाय पीर पाप से पिराय अधिकाय अति,
जाय न उपाय कै अनेक बिधि दाय की ।
हाँक हनुमान सुनि सद्य ही पराय जहाँ,
तहाँ बिललाय सुधि करै कपि धाय की ॥

मारत चपेट चोट लूम लपकाय बहु-,
भाँति से घुमाय सुठि जाति है अन्याय की।
सौंह सुत-बाय की दोहाई कपिराय,
'बनादास' डर खाइकै न रहै पीर पाय की ॥ ८९ ॥

कुष्ट दुष्ट भंजन अमित अघ गंजन,
सुजन जन रंजन सदहि हनुमान हैं।
बात पित्त सीत ज्वर दादु खाजु नास करै,
हरै तीनि ताप को दोहाई बलवान है ॥
नाना रोगदोष को बिनासत न बार लागै,
सोक औ संताप नासै जैसे जातुधान है।
'बनादास' सकल विकार चोपि चौपट कै,
सद्य सुखी करै सुठि करुना निधान है ॥ ९० ॥

सवैया

जो दुख दोष प्रवेस करै तब ही धरु मारुत नंदन ध्याना।
ग्रंथ बिजै बजरंग को पाठ येकादस आवृति को परमाना ॥
जेते कवित्त अहैं रुज ऊपर सो सब जानहु मंत्र समाना।
'दासबना' पढ़ै ताहि बिसेषि नसावहि व्याधि को ता बिधि नाना ॥ ९१ ॥

बैरी बिदारत देर न लागत है हनुमान को लोक में साका।
और पुरानन माहि प्रसिद्ध समीरकुमार अहै बल बाँका ॥
बेगहि मूल खनै रिपु को धन धाम के ऊपर मारत डाका।
'दासबना' करै सत्रु को चौपट मारुतनंदन को बल जाका ॥ ९२ ॥

सेये सुखी सब काल में राखत मंत्र जपे मनबांछित पावै।
ग्रन्थ के आदि में सो परमान है द्वादस अच्छर जो मन लावै ॥
ताको सरै सब भाँति सो काज समीर कुमार को जो जस गावै।
'दासबना' करि प्रीति प्रतीति न संसै सरूप तहाँ प्रगटावै ॥ ९३ ॥

कामना ऊपर जाप सवा लछ पीड़ा के अंग येकादस वारा।
ह्वै सुचि लै कुस फेरि कै फूँकिये आवृति सो यक बीस विचारा ॥
है अति भूरि प्रताप कपीस को नासै बलाय बिथा रुज सारा।
'दासबना' परतीति सप्रीति औ दूसर आस भरोस निकारा ॥ ९४ ॥

घनाक्षरी

नाम हनुमान ते अनेक काम पूर परै,
जरै ताप सकल न कछु अचरज है।
साहेब सुजान सत्ति सील को निधान अति,
केसरी किसोर कपि सरन वरज है॥
आरत ह्वै जब ही निहोरत पवनसुत,
तब ही सरत आइ ताकरि गरज है।
'बनादास' को विस्वास आस बीर पूर करो,
ग्रंथ सुठि सिद्धि होय येतनी अरज है॥ ९५॥

सवैया

साँकर में सुमिरै हनुमान करै सुठि कान समीर कुमारा।
वेद पुरान सदा जस जागत है जन हेत लिये अवतारा।
काम किये बहु संतन को तेहि कारन है कपि राम दुलारा॥
'दासबना' बड़ि बार भई अब काहे सुनै नहि मोर पुकारा॥ ९६॥

घनाक्षरी

कहत वेद पुरान कवि गुनगान करै,
केसरी किसोर सुठि औढर ढरन है।
कोविद कवीस्वर कुसल गान तान माँहि,
विद्या वेद व्याकरन आरत हरन है॥
करम वचन मन गति राम नाम ही की,
विरति त्रिलोकहूँ तें तारन तरन है।
'बनादास' इंद्री मन जीत है अतीत चित,
गाहक गरीब को सनातन परन है॥ ९७॥

छप्पै

कपि कराल सुविसाल भूधराकार कनक तन।
दसन वदन विकराल बालरवि असन सुजस घन॥
विकट वेष वजरंग भंग किये दनुज सकुल दल।
अति विसाल वारीस लंघि दहि लंक अतुल बल॥
पिंग नयन भृकुटी कुटिल भुज प्रलम्ब बल अगम निधि।
कह 'बनादास' मारुत सुअन कुसल सनातन सकल विधि॥ ९८॥

वेद विदित गुनगाथ साथ रहै नाथ सहायक।
बंदिछोर रन रोर बुद्धि में विसद विनायक॥
महादेव अवतार भार भुअ टारन हेता।
खल बन पावक प्रबल पवनसुत ऊरधरेता॥
सुभट सिरोमनि सूर सुठि विरति भगित दिढ़ ज्ञानघन।
कह 'बनादास' गुनसिंधु जस गावत सारद सहस फन॥ ९९॥

सवैया

काल बड़े अरु कर्म बड़े कलिकाल बड़े तौ बड़े तुम काहे।
जौ गुन दोष सुभाव बड़े तब ही निसि वासर है निति दाहे॥
हौ जौ बड़े तौ हरों सब साल भये तुमरे सरनागत काहे।
'दासबना' जौ अनीति कहै तौ करौ पुर बाहर हौं नति चाहे॥ १००॥

छप्पै

काम क्रोध मद लोभ मान मोहादिक भंजन।
काल करम कलिकाल दोष गुनगन अति गंजन॥
राम काम के हेत भयौ अवतार तुमारा,
या ते बड़ौ न काम करो जन संत उबारा।
खल बरूथ करि सबल दल पवन सुअन मृगराज हौ।
कह 'बनादास' तीतिर लवा राग द्वेष बर बाज हौ॥ १०१॥

विकट वज्र नख दसन बदन अति अरुन भयानक।
मनहु काल को काल तेज तीछन जनु भानक॥
लीला लूम अतौल लंक अहदंक भसम करि।
अति कराल भुजदंड अतुल बल विटप कुधर धरि॥
घाले कोटिन दनुज दल कुंभकरन घननाद कर।
कह 'बनादास' रावन प्रबल बल दल कुल संघार कर॥ १०२॥

कपि केसरी किसोर प्रबल दल माँहि सुभट्टा।
जबहि जुद्ध अति क्रुद्ध दलत रज निस्चर ठट्टा॥
जहँ विचलत वर सुभट परत तहँ बज्र समाना।
करत मारु घमसान पवनसुत अति बलवाना॥
कह 'बनादास' पावन सुजस राम चरितसरि मिलि चल्यौ।
गंग जमुन सित असित जल निरखत लागत अति भल्यौ॥ १०३॥

सवैया

भगत सिरोमनि ज्ञान निधान विज्ञान को आकार पौन कुमारा।
साँकर में सुमिरै हनुमान सुनै करि कान न लागत वारा॥
तीव्र विराग बसै उर अंतर है मम हेत सदा रखवारा।
'दासबना' कपि केर चरित्र गनेसहु सेस न पावत पारा॥ १०४॥

छप्पै

अतल बितल अरु सुतल तलातल और रसातल।
भूतल सातौ स्वर्ग माहि सुत पौन महाबल॥
रोग वनज वन हेत सदा हिमिरितु हनुमाना।
श्रुति पुरान कर गान अहै कपि ज्ञान निधाना॥
राम राजगादी निरखि प्रेम निर्भरा नृतकर।
कह 'बनादास' बजरंग सुठि ह्वै प्रसन्न दे विरुज वर॥ १०५॥

थोरी तन अवकाति राम के सरनहि आये।
ताहूँ पर नहि तजत रैनि दिन रोग सताये॥
छोड़े सकल उपाय सदा कपि तोर भरोसा।
राम नाम की वोट देखु जन को जनि दोसा॥
बोध विरति अनुराग मे रसाभास करि देत है।
कह 'बनादास' तातै बिनै तुमसे कवन सचेत है॥ १०६॥

गई बहोरनि बानि कानि प्रन की निज राखौ।
आव-बाव बहु बके तवन सुनि कै मति माखौ॥
वड़े लघुन पर प्रीति करत सब दिन चलि आई।
रघुपति सील निधान तासु जन तुम कपिराई।
कृपा कोर करि दीन पर बिनै सकल उर में धरौ॥
कह 'वनादास' मारुत सुअन लिखा ग्रंथ सो सिधि करौ॥ १०७॥

घनाक्षरी

अति दुखदाई बात सीत है अन्याई कपि,
तरु डार पात सम चीरि फारि डारिये।
काहे को विलम्म करो तुहूँ डरो मेरी भाँति
कौन अवकाति तोहि महाबीर मारिये॥

करै भंग भजन में ताही ते निहोरौं वीर,
रामरंग उतपाती छाती फारि डारिये।
'बनादास' आसतोष कीजिये कृपानिधान,
हनुमान बेगि जरि मूरि से उखारिये॥ १०८॥

रही बहु काल ते न ताते जात हाल कपि,
गाल फारि हाथ पाँव तोरि कै मरोरिये।
पापिनी पिसाची पीर देत है करेर करि,
हनुमान हाल ताहि धोती से निचोरिये॥
लूम से लपेटि कै चपेटि चूर-चूर करि,
दाबि कै हरोरि सद्द सिंधु माहिं बोरिये।
'बनादास' नास करो वेगि बाई सीत वीर,
बाँके रनधीर बार बार ही निहोरिये॥ १०९॥

भूत प्रेत सैन को सँघारत समीरसुत,
मारै जातु धान सम महाबलवान है।
भैरव भवानी ब्रह्म डरि कै पराय जाय,
बार बार करत दोहाई हनुमान है॥
सपथ रामदूत की सरन वायपूत की,
हरत सर्व बाधा को अवाज परै कान है॥
'बनादास' खास रामदास कौ प्रकास अति,
जाहि गति ताहि कौन करत निदान है॥ ११०॥

सवैया

मृत्तु कि मृत्तु औ काल को काल महा विकराल समीर कुमारा।
अंगद आदि सबै हिअ हारे समुद्र को जाय सके नहिं पारा॥
तौ जमवान कहे हनुमान सो राम के काम को तौ अवतारा।
'दासबना' भयौ भूधराकार पयोधि को नाघत लायौ न बारा॥१११॥

छप्पै

कपि कराल सुरपाल सदा राछस कुल घालक।
नितहि संत प्रतिपाल केसरी सुत खल सालक॥
वनज विपिनि रुज प्रबल सबल हिमिरितु हनुमाना।
सुभट सिरोमनि सूर चाखि जावै जस दाना॥

तरुन तीव्र त्रिपुरारि तन, बल घन अति मर्दन मयन।
कह 'बनादास' संकट समन पवन सुअन करुना अयन ॥ ११२ ॥

तेज तरुन तन भान महाबलवान कपीसा।
दारुन अतिहि दिमाक मर्दि डारे दससीसा ॥
बाँको बीर बरोर बिरद बर बिसद सनातन।
काबिकला सुठि कुसल बिरति विज्ञान ज्ञान घन ॥
मिरतुंजै जय जयति जय बोध खानि गुन धाम हौ।
कह 'बनादास' मन वचन क्रम सब बिधि रामगुलाम हौ ॥ ११३ ॥

स्वर्न सयल तन तरुन अरुन मुख दसन कठोरा ॥
कपि कराल सुविसाल कठिन नख भुज बर जोरा ॥
पिंग नयन भ्रू बंक वृहद लंगूर सोहाये।
जटा जूट पवि कूट सीस उपमा नहिं पाये ॥
अति वरिष्ट कपि सृष्ट है 'बनादास' मम इष्ट बर =
गावत जस उतकिष्ट सुठि लाभ होत फल चारि कर ॥ ११४ ॥

मन की व्याधि उपाधि हरैं सब सुअन समीरा ॥
होय चित्त अति चारु भजै जो हनिवत बीरा ॥
जो सेवै निसकाम राम भगती के हेता ॥
रीझि तासु बसि होत पवनसुत परम सचेता ॥
वेगिहि जाहिर करत है रघुबर के दरबार में ॥
कह 'बनादास' मारुत सुअन कुसल सदा सब कार में ॥ ११५ ॥

सवैया

पादुका पायक सोक नसायक हौ सुखदायक संतन केरे ॥
बुद्धि विनायक तू सब लायक सायक राम से वेग घनेरे ॥
हौ जस गायक तू रघुनायक मोर सहायक लावो न बेरे ॥
'दासवना' उरवास करो कपिनायक सोच हरो किन मेरे ॥ ११६ ॥

तेरे नेवाजे विना सुतपौन अकाज लखौ सबको जग माहीं ॥
राम कृपा नहिं भूलि करैं केहि कारन ते भवरोग नसाहीं ॥
तू करुना जेहि वोर करै सहजे नहिं ते तिहुँ तापन दाहीं ॥
दासबना करि पूरन आस समीर कुमार गहौ किन बाहीं ॥ ११७ ॥

घनाक्षरी

बाँके बजरंग तू रंगीले रामजानकी के,
अंजनी को नंद कपि केसरी दुलारे हो।
भरत के प्रान प्यारे लखन सुह्रिद सुठि,
रिपुदौन को अनंद अति देनहारे हौ॥
कौसिला के प्रानधन प्रिअ औधबासिन के,
रामदास सुरतरु पवन कुमारे हौ।
'बनादास' मम बंधु गुन सिंधु कपिनाथ,
घरी पल छिन निति मेरे रखवारे हौ॥ ११८॥

बूझि परी तेरी कृपा मोहिं बातजात सुठि,
रहै मन मनही में कहे न परतु है।
काहे न पुरान बेद गावै निति नयौ जस,
सुरनर मुनि सब ध्यान को धरतु है॥
उर अभिलाष अति नयौ निति बढ़तु है,
भै सगाई नई छिन छिनही चहतु है।
'बनादास' सील के निधान सुठि जाने कपि,
बार-बार पाय परि चरन गहतु है॥ ११९॥

गाल मेलि मुद्रिका सपदि सिंधु पार भये,
अति ही सकोपि किये सिंघिका को घात है।
सुरसा सँघारे लंकिनी को मुष्ट मारे कहे,
राम कि कुसल हरषात सिअ गात है॥
कोपि महाबीर जू कराल मुख पावक से,
आहुति समान कर श्रुवा फल खात है।
'बनादास' अछय सँघारि पुर छार किये
बाँके हनुमान के पताके फहरात है॥ १२०॥

जागती कला बिसाल खल काल बलवान,
राम को देवान ज्ञानघन बातजात है।
छले कुंभकर्न घननाद बे अवाद किये,
रावन गुमान नासे जैसे तरु पात है॥

प्रबल पराक्रम प्रताप जुद्धि भूमि माहिं,
कट्कटाय कोपि कोटि बल किये घात है।
'बनादास' साके कहि थाके सारदादि सेस,
बाँके हनुमान के पताके फहरात है॥ १२१॥

आनि कै सुषेन कालनेम मारि मूरि जुत,
लाये गिरि लखन जिआये न प्रभात है।
राम की कुसल बेगि लाये कपि औधपुर,
सुनि कै भरत अति उर हरषात है॥
नृभरा अनंद राजगादी माहिं नृत्त किये,
प्रेम ते मगन रोम-रोम पुलकात है।
'बनादास' बैरी को बिदारत न बार लागै,
बाँके हनुमान के पताके फहरात है॥ १२२॥

रिनी राम लखन भरत रिपुदौन सीअ,
भयौ कृत्कृत्त धन्य धन्य बातजात है।
राम प्रेम आकर सहत सुठि साँकर में,
केसरी किसोर अंजनी से जासु मात है॥
राम को गुलाम औ गोसाईं महराज गुरु,
'बनादास' मोसे तोसे कपि सुठि नात है।
कीजे काज दीजे बर लीजे न बिलम्म बलि,
बाँके हनुमान के पताके फहरात है॥ १२३॥

बिरति विज्ञान निधि कुसल सकल बिधि,
निकट बिसाल रूप मुख सुठि रात है।
भारी भुजदंड मारतंड को अहार किये,
उदय प्रभात होत अजहूँ डेरात है॥
दसन कराल बिकराल लूमलीला बहु,
हनु थल बज्र चूर इंद्र बिललात है।
'बनादास' लोकहू प्रमान औ पुरान श्रुति,
बाँके हनुमान के पताके फहरात है॥ १२४॥

दिढ़ परतीति प्रीति येक राम नामही की,
सुनि प्रभु जस नहिं श्रवन अघात है।

राम के गुलाम कामतरु रामदासन के,
बास खास अवध न कहूँ चलि जात है॥
कोबिद कपीस्वर कृपाल काल खल हेत,
देत फल चारि सुनि को न ललचात है।
'बनादास' साके तिहु काल में न नई आजु,
बाँके हनुमान के पताके फहरात है॥ १२५॥

जुद्ध भूमि कुद्ध भो बिरुद्ध करै पौनपूत,
केते जातुधानन के फारि डारे गात है।
औनि में पछारे केते सिंधु बोरि डारे,
किये अति उतपात अधमारे बिललात है॥
लखन सो कहैं बार बार हरषाय राम,
दैखो बातजात काम कैसन कमात है।
'बनादास' देवता अकास माहिं जै जै भनै,
बाँके हनुमान के पताके फहरात है॥ १२६॥

साके जुग जुग बेद जाके जस गावत हैं,
थाके कवि कोविद न पार कोऊ जात है।
ताके जाके तोर ताहि ढाँके करुना के कोर,
खलन बिबाके कूर काँपि कै परात है॥
आँके भले तोहि बसि नाके रघुनाथपुर,
पाके फल चारि देनहारे बातजात है।
'बनादास' काके किये काम न कृपाल कपि,
बाँके हनुमान के पताके फहरात है॥ १२७॥

तीरथ बरत तप जज्ञ औ अचार नेम,
जोग जप साधन न करै कोऊ काम है।
पूजा पाठ जम औ नियम सब हारि रहे,
दान पुन्नि औ बिचार जीते जुग बाम है॥
सास्त्र औ पुरान वेद विद्या बहु व्याकरन,
सिरताज सबको सुमिरु बसु जाम है।
'बनादास' बिरति बिज्ञान ज्ञान सांति लहै,
सिंघ कलि कुंजर को येक राम नाम है॥ १२८॥

कोटि जप कोटि तप कोटि जोग जज्ञ कोटि,
कोटि ब्रत तीरथ न तुलै राम नाम को।
कोटि दान कोटि पुन्नि कोटिन अचार करै,
कोटि ब्रत करि अरु धावै कोटि धाम को ॥
कोटि जम निअम करत दिन रैन बीतै,
विद्या बेद पाठ पूजा करै कोटि काम को।
'बनादास' कोटि ज्ञान ध्यान न समाधि तुलै,
सकल भरोस तजि भजै बसु जाम को ॥ १२९ ॥

नाम को अनन्य धन्य कौन हनुमान सम,
ज्ञान वितपन्य अैसो दूसरो न आन है।
देह बुद्धि दास जीव बुद्धि राम अंस माने,
आतमा बिचार सुद्ध येक निरबान है॥
बोध के हैं आकर देवाकर समान तेज,
रामजस श्रवन सदहि कर गान है।
भूत औ भविष्य व्रतमान में निदान यही,
'बनादास' और मत करत न कान है॥ १३० ॥

सवैया

जौ परलोक इहाँ सुष चाहु तौ मारुत नंदन को करु ध्याना।
नाम कि प्रीति प्रतीति बढ़ै दुख दारिद रोग बियोग नसाना ॥
प्रेम प्रवाह हिये उमगै बिन दामहि राम के हाथ बिकाना।
'दासबना' तिहुँ लोक विराग कपीस कृपा ते लहै दिढ़ ज्ञाना ॥१३१॥

घनाक्षरी

मन क्रम वचन स्वपन जौ न आनि गति,
राम छोड़ि दूसरो न जानत जहान है।
हनुमान प्रानप्रिय सदा रघुनाथ जू को,
'बनादास' तासु ग्रंथ किये निरमान है॥
तौ तौ सिद्धि ह्वैहै न संदेह तीनि काल माँहि,
लिखे कोर कागद पै रेख सो पखान है।
तन मन बुधि सब गति पति राम ही की,
मेरी रघुनाथ जानैं साहेब सुजान है॥ १३२ ॥

सुअन प्रभंजन पराक्रम प्रकास निधि,
कुसल सकल बिधि जानत जहान है।
साधु मुनि सेवत हैं चारि फल लेवत हैं,
जोगी सुर सिद्धि धरैं सबै कोऊ ध्यान है।
इन्द्री मन जीत न अनीत आवैं जासु चित,
गावैं कवि कोविदादि महा बलवान है।
'बनादास' पीर को हरत नाहिं बार किये,
जै जैकार करै कपि करुनानिधान है॥ १३३॥

औध अैसो धाम गुन ग्राम हनुमान जू को,
किये परारम्भ अति सुभ भौमवार है।
लघु मति दीन बुद्धिहीन 'बनादास' कहे,
छमा सब भाँति करै संत सरदार है॥
भूल चूक सकल सँभारै भले कृपा करि,
साधु गुनगाहक कहत श्रुति सार है।
कृपा महाबीर जू की मंगरै को पूर भयो,
येक सत चौंतिस कबित को बिचार है॥ १३४॥

इति श्री बजरंग बिजै ग्रन्थ समाप्त सुभमस्तु॥ दः षुद॥ मिति आषाढ़ दोसर सुदी ८ सुभ संमत १९३१ सन १२८१ साल मुकाम श्री अजोध्या जी षास॥ श्री सीताराम राम राम राम।

श्री हनुमन्त-विजय

श्रीरामजानकी चरन कमलेभ्यो नमः ॥

अथ हनुमंत-विजय ग्रन्थ लिख्यते

छप्पै

बंदौ पवनकुमार चरन सिर धरि बहु बारा।
सब साधन को त्यागि राम को नाम अधारा॥
रूप रसिक सिरताज लाजजन राखन हारा।
श्रवन सुजस सुनि राम नैन जल प्रबल पनारा॥
गदगद कंठ रोमांच तन, मन-इन्द्री स्वाधीन अति।
कह 'बनादास' परकास उर, सहज सरूप अबाध गति॥ १ ॥

अथ मंत्र

अंजनी नंदनाय कूट स्वाहा।

छप्पै

राम काम हित जन्म कर्म पथ अवसि विरागी।
रहित वासना सर्व गर्व रामा अनुरागी॥
सींव स्वरूप-ज्ञान जीव पद हरि को अंसा।
तन ते राम गुलाम सैन्य कपि के अवतंसा॥
तीनि लोक तिहुँ कालमें, चहुँ जुग को ऐसा रनी।
कह 'वनादास' मम कल्पतरु, कामधेनु चिंतामनी॥ २ ॥

जैति दूत रघुवीर धीर, धुर धर्म पताका।
रिनी राम सह बंधु-सीय तिहुँपुरमें साका॥
कवि कोविद की काह बुद्धि सारद की हीची।
किमि वरनौं मुख एक बालमति अतिसै नीची॥
अंतरयामी रामसिय, ताते साधु विसेष है।
कह 'बनादास' सुचि संत महँ, रेखा अमित अलेख है॥ ३ ॥

ताते नहिं कछु कहौं रहौं मन ही मन माने।
जो जो, अरजी किये विना मरजी सो जाने॥

छप्पै

दास दुखायौ दैत गली नरहरि कस लाये।
खंभ फारि बध किये लोक वेदहु जस गाये॥
तुमसो को बलवान विद्, राह निकारन हार है।
कह 'बनादास' अवलंब मम, अति प्रिय प्रान अधार है॥ ४॥

अजमंजस में मगन लगन तुमसे अति लागी।
निसिदिन एकै संग तबौं माने बड़भागी॥
चक-चकई यक साथ व्याध बसि कर्म फँसाये।
राखे निसि पिंजरा दोऊ अतिसै सुख पाये॥
सोई अवसर है बने, सुजस घने तिहुँ भुवन है।
कह 'बनादास' करुनायतन, बैरी दारिद दवन है॥ ५॥

सवैया

कर्म असक्त जगत्त भयो तब भक्त अभक्त की क्यों गति येकी।
नाहक मूढ़ मरै भजते, लजते जग में करिकै बद नेकी॥
ऐसी कहूँ तो लिखी न सुनी जन साखि मिली तो कहा कहबे की।
'दासबना' न टरो तिहुँकाल में रामगुलाम ने टेक जो टेकी॥ ६॥

नाम-गुलाम निकारिहौं आज ते लाज नहीं सहि जात हमारे।
गाज परै दरबार-दराज पै साज़ि कै बाज को लावा पछारे॥
'दासबना' मन ही मन जानत काह रह्यो जब जाँघ उघारे।
हाथ को छूटो नहीं सर लौटत जाइहै तव संग ही महिमा रे॥ ७॥

ताप तपै न चपै कोउ काल में है तो नहीं कोउ एक हमारे।
जक्त में नाम परो हरिभक्त बिनासिहै तौ तुमरे गुनगारे॥
मेरे गरीब के का बिगरै बिगरो 'बनादास' अहै पनवारे।
तेरे बनाये बनै अबकी तबकी से नई रघुबीर दुआरे॥ ८॥

कुंडलिया

सहज सयाने साहेबहिं कहना अति सै खोरि।
ताते एकहि बार भल मानहु बेरि करोरि॥
मानहु बेरि करोरि जोरि कर अरजी मेरी।
बढ़ै नवा अनुराग रामपद करुना तेरी॥

'बनादास' यहि रोग को हनुमत मारु मरोरि।
सहज सयाने साहेबहिं कहना अतिसै खोरि॥ ९॥

चेला तुलसीदासको झेला जावै दुक्ख।
ताते अतिसै सरम है कौन देखावै मुक्ख॥
कौन देखावै मुक्ख रुक्ख तेरा निति हेरै।
तू कछु करै न कान मान लै हमरी बेरै॥
'बनादास' दै दादि कौ मन मनिहै अति सुक्ख।
चेला तुलसी दासको झेला जावै दुक्ख॥ १०॥

बड़ अनीति दरबार बड़ यह कहुँ सुनी न कान।
लोक वेदहूँ विदित हैं हनुमत राम देवान॥
हनुमत राम देवान ज्ञान में सागर जैसे।
बुद्धि विनायक वृहद जुद्धि में कहूँ न ऐसे॥
'बनादास' जान्यौ जगत मोंहि भजत भनवान।
बड़ अनीति दरबार बड़ यह कहुँ सुनी न कान॥ ११॥

दैहिक, दैविक भौतिको, तपत एक ही बार।
खरो खोट रघुनाथ को और न दूजो द्वार॥
और न दूजो द्वार बार येकौ छल राखी।
रसना गलिकै गिरै सरै उरवासी साखी॥
'बनादास' तेहि दरदको तू है दलने हार।
दैहिक दैविक भौतिको तपत एक ही बार॥ १२॥

ताकी सुनवाई नहीं जो कोउ करै पुकार।
लोक वेदहू विदित है जैसा यह दरबार॥
जैसा यह दरवार कौन दुखिया जग मोसे।
लोकहु वेद प्रमान सुना सुखिया नहि तोसे॥
मोहि प्रथम दिन आदि है जब आयो दरवार।
ताकी सुनवाई नहीं जो कोउ करत पुकार॥ १३॥

गद्दह अतिसै नीच है, लद्दह धोबी केर।
ताही को असवार मैं परा करम के फेर॥
परा करम के फेर चेरपन प्रभुको लीना।
दसरथ लाल दयाल रंक ते राजा कीना॥

'बनादास' आरूढ़ गज होत न लागी देर।
गद्दह अतिसै नीच है लदह धोबी केर॥ १४॥

सारदूल किये स्यार ते कहता हौं सतिभाय।
ठकुरसोहाती तनिक नहिं जानहिं सिय रघुराय॥
जानहिं सिय रघुराय सकल मनभावत पाये।
घोड़ा देत न लोभ हेत कोंड़ा ललचाये॥
'बनादास' लेहैं मचलि बालक गो अनखाय।
सारदूल किये स्यार ते कहता हौं सहिभाय॥ १५॥

दुइ दाना को मरत हैं बादसाह को पूत।
सुनिकै अचरज ना लहै ऐसा को मजबूत॥
ऐसा को मजबूत विपजैं देखि न भाजै।
लगै न बल्ली बाँस आपु कहि आपै लाजै॥
'बनादास' नहिं त्यागिहै घरमें होय कपूत।
दुइ दाना को मरत है बादसाह को पूत॥ १६॥

घनाक्षरी

लोचन विकट लूम ललित अतुल बल,
वीर बजरंग धीर सुअन समीर भो।
बाल केलि लीले रवि कवि कौन पार जाय,
जाके उतपात तीनि लोकहू अधीर भो॥
देत फल चारि चारि चाउर चढ़ाय दिये,
'बनादास' आप सोई दूत रघुवीर भो।
राम हनुमान रुद्र से न कहूँ कान सुना,
कैसे मुख कहत न हरत मेरी पीर जो॥ १७॥

निज जाँघ खोले लाज गाज परै आपदा पै,
परदा फटत बड़े साहेब को स्वान ते।
कौन तिहुँ लोक में न मरै अपमान करि,
जिअैं साधु जन नाहिं जानी कौन ज्ञान ते।
थोरी बात लागि दोऊ ओर बलखात जात,
मारु घातु लाय दुख कोप के कृपान ते।

'बनादास' दीन द्वार करत पुकार हरि,
हाय! हनुमान काहे सुनत न कान ते ॥ १८ ॥

सुजस सघन लोक वेद हू पुरान माहिं,
राम के गुलामको उसीलो एक आप हैं।
सारे महाराज काज सर्व अंग बाज सन,
रावन समाज लवा अति बसि पाप है ॥
हारे कहि बार-बार दूजो नहिं और द्वार,
'बनादास' काहे से तपत तीनि ताप हैं।
तामें दुइ विसेषि नाहिं लोटि पोटि पेले जात,
कैसो उदै पाप हेत भौतिक विलाप है ॥ १६ ॥

सवैया

सान्ति को सागर ज्ञान उजागर हौ गुन आगर रामदुलारे।
सारद पार लहैं न कहे जस 'दासबना' बुधि बाल गँवारे ॥
तेरे दुआरे किये अरजी प्रथमै मरजी के देवावन हारे।
आजु कहा सुधि भूलि गई कि अभागि बड़ो केहि लागि बिसारे ॥२०॥

झूलना

सिद्धि करु सिद्धि करु बात बजरंग मम लात के घात रावन पछारे।
महा उतपात विललात लंका सकल लूमलीला कनक कोट जारे ॥
घात करि पूत मजबूत सुत पवन को खाय फल बाय मुख बन उजारे।
'वनादास' मुँदरी हरो सोच जनकात्मजा नाघि सामुद्र दलि
चोथि मारे ॥ २१ ॥

गर्भ करि पात राछसी विललात अति गर्जिकै चले हनुमंत धाये।
नाघि वारीस सैना किये सुखी सब दुखी दुख दुसह मानौ जियाये ॥
अंगदादिक चले रघुवीर बेगि पहुँ कुसल सीता सुनी मोद पाये।
'वनादास' लछिमन सहित दल कपिराज मुद दुखो मै हेत नहिं
जानि पाये ॥ २२ ॥

साजि कपि कटक चढ़ि पीठ पर बंधु दोउ आय तट सिंधु रिपु बंधु भेटे।
घेरि लंका पवन पूत बंका बली गली दर गली दैतन दपेटे ॥
वनादास विख्यात विललात रावन रनो बचो कोउ नाहिं
हनुमत चपेटे ॥ २३ ॥

लाय गिरि भूरि बल तूरि सक्ती सबल प्रबल सुत पवन लछिमन जियाये ॥
सोच सामुद्र मे मगन रघुबंस मनि तेहि ते अवसि आनन्द पाये ।
बीर घट-कर्न घननाद बरबाद करि सैनपति को न हनुमन्त गाये ॥
'बनादास' बिललात बीते दिवस मोहि बहु आजु लगि नहिं
सरबंग पाये ॥ २४ ॥

घनाक्षरी

भौमवार द्वार बार-बार ही पुकार करौं,
डरौं नहिं मरन को महा कलकानि है ।
डारु मारि बेगि कै सुधारि राखु महाबीर,
पावों मन भावत तौ मिटत मलानि है ॥
चहूँ जुग चहूँ वेद तिहूँ काल तिहुँ लोक,
भूतनाथ भोलानाथ तोसे कौन दानि है ।
'बनादास' मोसे दीन दूबरो दयालु देखु,
पर्‍यो मचलाय पाये बिना नहिं मानिहै ॥ २५ ॥

सवैया

साँची कहौं सुनु मारुत नन्दन जा दिन ते हरि सर्न लई है ।
कागद कोर पै मोर लिखा सब साधन पै हरतार दई है ॥
'दासबना' नहिं जानि परै दहुँ कैसन राम रजाय भई है ।
सांति मिलै नहिं सोच के कारन पोच बिचारि बिसारि दई है ॥ २६ ॥

कुंडलिया

जबते आये सरन में पूरि पूरी सब बात ।
दुइ बिगरी केहि कारने सो नहिं जानी बात ॥
सो नहिं जानी जात बातसुत परम सयाना ।
कीजे उर को बोध हेत ताही ललचाना ॥
'बनादास' बनिहै सही अबकी मन पतियात ।
जब ते आये सरन में पूरि पूरी सब बात ॥ २७ ॥

महासान्ति सुत पवन है सांत देय करि मोहिं ।
सकल कला करिकै थके राम दोहाई तोहिं ॥
राम दोहाई तोहिं मोहिं दूसरि गति नाहीं ।
भाषौं सप्त करोरि जोरि कर परि षद पाहीं ॥

बनादास की आस है सबल दूत हरि जोहिं।
महासान्ति सुत पवन है सांत देय करि मोहिं॥ २८॥

ज्यों गरीब धन धनिक को देखि देखि ललचात।
अति सै खोटी भागि सिर वह कछु सुनै न बात॥

वह कछु सुनै न बात नात तोसे है साँचा।
मैं हूँ राम गुलाम साँच तू है अति काँचा॥
'बनादास' बनि है सही मन नाहीं अकुलात।
ज्यों गरीब धन धनिक को देखि देखि ललचात॥ २९॥

दंडक

अंजनानन्द आनन्द विग्रह वृहद हद्द हरि भक्त अति ऊर्ध रेता।
प्रबल संताप सोकादि परताप हर दनुज कुल निधन सुठि ब्रह्म वेता।
गान गंधर्व गुन सर्व विद्या निपुन गूढ़ गति भक्ति वैरागि सींवा।
कोस सार्दूल सिंगार सेना सकल अबल अवलम्ब अद्वय अतीवा॥३०॥

गुन गोतीत रनजीत जालिम जुलुम जक्त विख्यात अति रामदूता।
भूधराकार कंचन बरन तरुन तन बुद्धि बल वृहद् अति पवन पूता॥
अवनि नाटक निपुन नीति पालक परम धर्म हरि भक्ति गति सर्व त्यागी।
नाम निष्ठा नदी प्रेमधारा धवल ललित अति लच्छि वैभव विरागी॥३१॥

वीरवर देस बाँको बिगत सर्वमल कलानिधि कुसल कैवल्य रासी।
रायवसरत्थ सुत रायकृत तत्व विद सर्व ऐस्वर्जवसि अवधवासी॥
सर्न दुख दर्न है पर्न हनुमान हठि मुक्ति आनन्द जनु दानि कासी।
'बनादास' विस्वास करि आस द्वारे दुखी सुखी करु सद्य मम
सोच नासी॥ ३२॥

सवैया

हे हनुमान सुजान सिरोमनि जानि है को महिमा बे जनाये।
जानत राम गुलाम के काम को, दाम बिना हरि हाथ बिकाये॥
जो न भये जग में प्रभु दास गये नहि गर्भ बेनाहक जाये।
'दासबना' अवलम्ब न दूसर मेरी बनेगी तिहारे बनाये॥३३॥

घनाक्षरी

भौतिक चबाय ले चवैना से समीर सुत,
दैविक दबाउ दौरि लूम लवा कोप कै।
दैहिक दुसह दुख सुख सारे लोप किये,
कट कट कोपि चोपि खाय मुँह बाय कै॥
केवल भरोस मोहिं एक सीतानाथ ही को,
कहौं कछु राखि तौ विचारि ले बनाय कै।
'बनादास' दूबरो दयाल देर करै जनि,
अंजनी को नन्द तू सहाय असहाय कै॥ ३४॥

दसा यही जीवन की कहौ जग सारे हेत,
आपने ही पेट खाय पालत कपूत है।
अब तो कहत खरो खोटो सब राम जन,
साधु को सरूप सबहीं सो मजबूत है॥
'बनादास' आव बाव बकत अनेक भाँति,
छुटिहै न छोर तब कृपा अवधूत है।
परम कृपाल तू तौ ही की गति जानै सब.
मति न सकति कहि माया अनकूत है॥ ३५॥

करम वचन मन सदा एक राम नाम,
साधन सकल और काहू से न सूत है।
धुनौं सिर बार बार कोऊ न पुकार सुनै,
सरम सरीक जन अति पौन पूत है॥

परम कृपाल बाल बुद्धि 'बनादास' वदै,
सदै सुद्धि राखु बल अति अजगूत है।
पाय नर तन जन भयौ जौ न राम जू को,
पूतू तौ न जयौ भयौ मूत ही को मूत है॥ ३६॥

बिना उतसाह उर भजन बनत नाहिं,
सोच और संदेह ते सुखात जात गात है।
चिंता के भये लौं गर्भ गये ते मनहु भला,
साधु के गिलानि हिय अति लघु बात है॥

'बनादास' बिगरी बनाइहै देवान राम,
सुना खास कलम सदहि बात जात है।
सब हाथ आपके प्रताप कौन पार जाय,
पाय परि द्वार बार बार बररात है॥ ३७॥

छप्पै

इन्द्रमान किये भंग वज्र चूरन लगि हनुथल।
दंग भई दल दैत लंक निसिवासर खलमल॥
गये गरुल को गर्व सर्व जदुकुल बल थाका।
सतिभामादिक रानि मान सुत पौन विवाका॥
रुकुमिनि श्रीसीता बनी, कृष्ण भये रघुनाथ जब।
कह 'बनादास' बाँको विरद, हनुमत नायो माथ तब॥ ३८॥

छंद

रघुपति रूप अनन्य धन्य नेमा अनुरागी।
को कवि बरनै जोग बिस्व कीरति कल जागी॥
जन मन दूषन दलन केसरी सुत मतिधीरा।
हरन सोक संताप पाप सुठि सुअन समीरा॥
कुधर उपारे लखन हित जुद्ध समय सिव जू थके।
कह 'बनादास' करिये छमा आव बाव बहु विधि वके॥ ३९॥

नास्तीक अति भला काहु के बस में नाहीं।
वह सेवकाई कवनि स्वामि निज कसमें नाहीं॥
याही लाजन मरत साज सब अटखट साजा।
राम दुआरे दुखी जहाँ के हनुमत राजा॥
सहौं अमित अपमान उजुर नहिं करौं जन्म भरि।
नाना संकट सहौं राम नहिं सकैं हृदै टरि॥
यही वड़ो अभिलाष लाखत भाखत करि सौंहैं।
वढ़ै राम पद प्रीति रहौं किन नर्क परो है॥
'बनादास' सतिभाय वात हिय की यह भाषी।
सर्व सम्हारै राम काम हनिवत कर राखी॥ ४०॥
सोक सिंधु में मगन भरत अवलंबन पाये।
पवनपूत जलजान ज्ञान विग्रह जनु आये॥

सकल भाँति करि बोध आपु मनभावत लीना।
राम विरह अति दुखी सुखी पुरवासी कीना ॥
रिनी किये प्रभु बंधु कहँ करुनानिधि कौसलधनी।
कह 'बनादास' दीने खबरि अब चाहत मेरिउ बनी। ४१ ॥

कंडलिया

भौमवार उपचार भो, पूरन मंगर वार।
ग्रंथ विजै हनुमत भयो, सर्व सँवारै कार ॥
सर्व सँवारे कार बिगारै तौ डरि नाहीं।
और न दूजो ठौर गौर का है या माँही ॥
'बनादास' की आस है, एक दुआरा सार।
भौमवार उपचार भो, पूरन मंगरवार ॥ ४२ ॥

जैहैं उर कै भाव कैं अैहै अपनो दाँव।
गैहै जस रघुवीर निति बनिहै सकल बनाव ॥
बनिहै सकल बनाव जाँव अब कौने द्वारे।
ठाँव नहीं तिहुँ लोक ओक बिन कौन न हारे ॥
'बनादास' पाँसा पर्यौ, छ्वैहै सब पछिताव।
जैहै उरको भाव कै अैहै आपनो दाँव ॥ ४३ ॥

यह दसखत हनुमान को मानत है मन ठीक।
भये ग्रंथ पूरन भयौ ताते अतिसै नीक ॥
ताते अतिसै नीक लीक पाहन पै खाँची।
टरिहै नहिं कोउ भाँति बात ऐसी यह साँचो ॥
'बनादास' अतिसै सुखो, राम बिना सब फीक।
यह दसखत हनुमानको, मानत है मन ठीक ॥ ४४ ॥

सवैया

देह छुटै न छुटै दुख दीरघ श्रीरघुवीर कृपा के अगारे।
बीच में पेंच है तेरी परी दरबार करिंदन की गति न्यारे ॥
मैं हौं फकीर लकीर कहौं करि 'दासबना' कहँ दाम हमारे।
देउ अँकोर तो काम चलै कपि तू अवधूत न धूतन हारे ॥ ४५ ॥

सांति को भूखो हौं बारहि बार तुकार सबै यहि हेत हमारे।
झोली झरै तौ सरै सब कारज मागनो तू न लजावन हारे॥
जो कहते फिरि माँगहु जाय गये घर की यह बात बिचारे।
'दासबना' नहिं और चहौं रहौं रामहिं रंग सदा मतवारे॥४६॥

पेट खलाय ललाय फिरे जग जन्म अनेकन बारहि बारे।
हारि हिये हरि हाल चले तब आय परे रघुबीर दुआरे॥
जान्यौ सबै कछु लागि गई अजहूँ नहिं जात ललाव हमारे।
काहे को बानि लगाय दई कह 'दासबना' तू बनावन हारे॥
मंगन को है सुभाव यही जस पावत धावत त्यों अधिकारे।
माँगिबो जात यही दरबार कहूँ कहुँ सन्तन माँहि सुनारे॥
'दासबना' न ललाव गयौ करिहौं अब द्वारहि द्वार पुकारे।
आवै न कोई अँकोर बिना सब दाम के गाहक राम दुवारे॥४७॥

गायहु रोये ललाये मिलैं नहिं तौ मन एक उपाय विचारे।
जाय करौं जग में भँड़ई कहँऊ नहिं ऐसन और दुआरे॥
'दासबना' दसरथ्थ कुमार के हौं हरि हाल रिझावन हारे॥
बाँधौं चहैं जौ गुरू पुतरा उतरा तेहि ते करिहौं बहु बारे॥४८॥

कुंडलिया

साह तलक निरवाह है आगे नहि मम हाथ।
ह्वै ह्वै जो कछु रहा कौन पचावै माथ॥
कौन पचावै माथ गाथ गुन रघुपति गावों।
परा रहौं दरबार निरादर केतो पावों॥
'बनादास' जनि त्यागिये, काठ चलै सिर पाथ।
साह तलक सिरवाह है, आगे नहिं मम हाथ॥ ४९॥

यह अष्टक अठये वरष मन हठ छोड़ै नाहिं।
वोड़ै केती ओट को चोट परै सिर पाँहि।
चोट परै सिर पाँहि नाहि कछु हाथ हमारे।
चिरई को जिउ जाय सदा लरिका खेलवारे॥
'बनादास' सब कै थका, बझा है पौमाहिं।
यह अष्टक अठये वरस, मन हठ छोड़ै नाहिं॥ ५०॥

कौन डकैया मारिहै, मरे खनावैं ताल।
अब तो सुनवाई नहीं, आगे कवन हवाल ॥
आगे कवन हवाल, माल मुद्रा बड़ नाहीं।
जमा दिये नहिं हानि, व्याज कारन ललचाहीं ॥
अब निज दिसि लखि ख्याल करु, 'बनादास' बुधि वाल।
अब तो सुनवाई नहीं, आगे कवन हवाल ॥ ५१ ॥

ग्रंथ भये अष्टक भयो, कष्टक अति बरियार।
पंचरतन तापै भये, आपै जाननहार ॥
आपै जाननहार चेत आरत डर नाहीं।
राम और हनुमान, आन कह मो मन माँही ॥
'बनादास' मैं हूँ मिला, हिला हजारों बार।
ग्रंथ भये अष्टक भयो, कष्टक अति बरियार ॥ ५२ ॥

फुरै न उर कछु कामना, मुरै न मन दिसि राम।
दुरै सकल जंजाल जग, उरै अवसि निसकाम ॥
उरै अवसि निसकाम साम भिनसार कहाँ है।
नहिं जानौं बसु जाम घाम औ छाँह तहाँ है ॥
'बनादास' निबहा चहै, हरदम निष्ठा नाम।
फुरै न उर कछु कामना, मुरै न मन दिसि राम ॥ ५३ ॥

निश्चल राखु सरूप निज, यही खूब है बात।
बात जात बाँको विरद, ताको नाहिं डेरात ॥
ताको नाहिं डेरात, कौन जग में जस गैहै।
'बनादास' सब द्वार, दादि अपनी नहिं पै है ॥
मनि मानिक पाये सबै, अवसि हिये हरसात।
निश्चल राखु सरूप निज, यही खूब है बात ॥ ५४ ॥

रोगपराजय

❀ श्री ❀

श्री गणेशायनमः । अथरोगपराजय लिख्यते ।।

सवैया

प्रानहु ते प्रिय रामकृपाल बिसाल भरोस न दोस है मोरा ।
ग्रंथ नये हित आजु से लेखनी हाथ न लेउँगो कागद कोरा ।।
'दासबना' न बना यकहूँ यह बाँको विरद सनातन तोरा ।
पाहन लीक है बानी बली सब तू जन को पन पाल बरोरा ।।१।।

घनाक्षरी

जानै और कौन उरवासी बिन ही को गति,
निज गति माफिक कहैंगे सब लोग है ।
कोई भला कोई बुरा ताको न सनेह कछु,
आपनोई भरे पेट साधु के न जोग है ।।
'बनादास' प्रीति औ प्रतीति जुत पाठ करै,
जव लै न कटि जाय काल कर्म भोग है ।
नीक सब ही की लागी मेरिहुह अभागि भागी,
जागो राम कीरति बिनासे सब रोग है ।। २ ।।

तन दुख हू ते मन दुख अति भारी अहै,
विगरै न राज, पूत-नाती न मरैया हैं ।
अंत की न सोच पोच काहे से डरत नाहिं,
'बनादास' राम-पद-प्रेम को अरैया हैं ।।
भयो बकसीस भोग-रोग रसाभास करै,
ताते किहीं हीन सारे अवसि बरैया हैं ।
राम नाम अनल प्रवल पौन-पौन-पूत,
वात सीत बावसीर आहुति जरैया हैं ।। ३ ।।
तन रोग मन रोग, भव रोग, भूरि भागि भागे,
लागे सूल शत्रु न एकौ बचै योग है ।

लौना-सूर माफिक निपात कियो बाँको वीर,
प्रिय रघुवीर हते तिहूँ ताप भोग है ॥
'बनादास' जालिम हुकुम रघुनाथ जू को,
अब आवै लायक न गये सब रोग है।
बकतर सर्व अंग जंग करि सकै कौन,
दौन दुख दारि दावि सिया को नियोग है ॥ ४ ॥

रुचि रूरि लषन की भरथ रजाय भई,
भागि भूरि जागी मोर रिपुदौन बीर है।
रच्छा सर्व अंग करैं रोग रूहि आवै नाहिं,
बानी पंच बर्म कर सरब सरीर है ॥
'बनादास' आनंद समाय न सकत उर,
रहे उड़ि गये आवै सपने न पीर है।
चौकी हनुमान की सजी सर्व काल माँहि,
प्रबल प्रताप बड़ो सुअन समीर है ॥ ५ ॥

सवैया

बाई बिलैहै सबै अँग से सँग से चलि जइहै बिरंचि को आँको।
लूम लपेटि लियो करि कोप चपेटि कै चोप प्रभंजन बाँको ॥
आरत-हर्न कृपाल सियावर तीनिहुँ काल तिहूँ पुर साको।
'दासबना' मन औ बच कर्म हिये हठ कोटि भरोस है जाको ॥ ६ ॥

जो करिहै सो हमारे भले हित यापै भई दिढ़ है मति मोरी।
साखो सदा तेहि को उरवासो विनासी विपत्ति हिये निज हेरी ॥
'दासबना' अब जैहै सबै दुख वेद पुरान महानन टेरी।
ईस भये अनुकूल सबै सुख जीवहि नेक न लागत देरी ॥७॥

घनाक्षरी

उर्ध वायु बावसीर घाउ दिये कोटि भाँति,
देह गाँव छोड़ि भई भागत न देर है।
सीतउ बिलानी हेरे मिलै न निसानी,
उर माया सकुचानी राम हुकुम करेर है ॥

'बनादास' इन्द्री देव-इन्द्री बसवर्त्ती भई,
गई भौ पीर न करैआ कोई जेर है।
मौत मुंह बाय बिललाय रही बार-बार,
बाँको दशरथ्थ किये सेर से सुमेर है ॥८॥

विघन विकट कोटि कोटि सहि साधुजन,
लोटि रहे सरन समर्थ रघुनाथ को।
वेदहु न जानै भेद गेद कवि कौन कहे,
दीन दुख दासन को होत न सनाथ को ॥
'बनादास' तिहुँ काल तिहुँ लोक चहुँ वेद,
हेरि हिये देखे हैं अनाथन के नाथ को।
भारो गुन गाथ गुननाथ न बखानि सकै,
अतिसै अकथ्थ है विरद सियानाथ को ॥९॥

मन, कर्म, वचन जो होइहौं रामदास खास,
लिखौं कोर कागद पै टरन न जोग है।
भाषत भविष्य रिष्य भयो निज निज मत,
कुंभज समीर-सुत सोखे सब रोग है ॥
'बनादास' डंका की अवाज दगावाज नहिं,
प्रेरक कहावै गये काल कर्म भोग है।
यह पंच रतन पतन किये सारो दुख,
राम-नाम जतन औ ईस को नियोग है ॥१०॥

कुंडलिया

जब से आये सरन में, तन करि भोगे दुखख।
'बनादास' जानै जगत, मिल्यौ न सपनेहु सुखख ॥
मिल्यौ न सपनेहु सुखख, खोटि प्रारब्ध हमारी।
करै ढूँढ़ाई स्वान, परै साहेब सिर गारी ॥
निंदा बगरै राम की, कवन देखावै मुखख।
जब से आये सरन में, तन करि पायो दुखख ॥११॥

कुंडलिया

दिये ज्ञान विज्ञान वर, औ अनुराग विराग।
दिढ़ प्रतीति निज दिसि दिये, प्रगटे पूरन भाग ॥

प्रगटे पूरन भाग लाग रघुनायक सरना।
काल, कर्म, गुण दोष गयो जन्मन औ मरना ॥
तन दुख रहिगो दाग यक, सब कोउ कहै अभाग।
दिये ज्ञान विज्ञान वर, औ अनुराग विराग ॥१२॥

भयो रोग निर्मूल अब, जानि ईस अनुकूल।
बनादास आनन्द अति, बिगरो बैठो तूल ॥
विगरो बैठो तूल भूलि मिटिहै सब केरी।
देखिहैं देह निरोग जोग महिमा हरि हेरी ॥
तब निन्दा करिहै कवन, राम श्रवन जनु सूल।
भयो रोग निर्मूल अब, जानि ईस अनुकूल ॥१३॥

पंच रतन पर तीन भो, ताते अष्टक नाम।
एक भये पुनि नौ रतन, अतिसै सुख को धाम ॥
अतिसै सुख को धाम रोग हित मनहुँ त्रिदंडा।
अंग अंग दिये तूरि उठै नहिं डारे भंडा ॥
'बनादास' रुज नास भै, सुखी रहत वसुयाम।
पंच रतन पर तीन भो, ताते अष्टक नाम ॥१४॥

तौ धृग धृग जन राम को, जौ न गयौ रुज मूल।
कोरे कागद लिखत हौं, दूरि भयौ सब सूल ॥
दूरि भयौ सब सूल असित भादौं है दसमी।
भाषत पोढ़ी पैज सत्ति बातैं हैं कसमी।
नाम विरद बाँको बली नसिहै सब का सूल ॥
तौ धृग धृग जन राम को, जौ न गयौ रुज भूल ॥१५॥

कुंडलिया

लोक वेद हू विदित है, महिमा नाम अपार।
रटत भयो तैंतिस बरस, जरो न पाप-पहार ॥
जरो न पाप पहार तूल पावक जिमि नासै।
'बनादास' यहि भाँति नाम गुन सन्त प्रकासै ॥
ग्यारह बानी रुद्र है, रोग प्रलय करतार।
लोक वेद हू विदित है, महिमा नाम अपार ॥ १६ ॥

बारह बानी जानिये, रुज हित रघुपति बान ॥
अति अमोघ श्रुति विदित है, महिमा द्वादश भान ॥
महिमा द्वादश भान ताप तिहुँ जारन हारा ।
'बनादास' दुख बिटप वीर बजरंग कुठारा ॥
है प्रतीति औ प्रीति दिढ़, मेरी पैन कृपान ।
बारह बानी जानिये, रुज हित रघुपति बान ॥ १७ ॥

सवैया

नाम को कानि हिये हुलसै सुठि प्रीति महा महिमा री ।
तीनिहुँ काल चहूँ जुग में नहिं सेवक पैज सका कोउ टारी
'दासबना' मन औ बच कर्म कहौं बल रामहि के ललकारी ।
पेरक एक के हाथ सबै सिधि मोहिं गरीबहि जीतन हारी ॥१८॥

कुंडलिया

ध्रिग मैं मेरा पाप ध्रिग, ध्रिग है मेरा जाप ।
ताप साँप नासै नहीं, भरनी नाम प्रताप ॥
भरनी नाम प्रताप महामहिमा सुठि मोटी ।
बरनै सारद सेस 'बनादासै' सँग खोटी ॥
कौन कहै अरु को सुनै, जो न दहै त्रै ताप ।
ध्रिग मैं मेरा पाप ध्रिग, ध्रिग है मेरा जाप ॥ १९ ॥

सवैया

लोक विरुद्ध औ वेद विरुद्ध करै मन बुद्धि तेही ते विचारा ।
सुद्ध स्वरूप भयो निरनै न कहै न सुनै कहूँ जीत न हारा ॥
'दासवना' वलो पेरक पेरना ताहि ते कै दिढ़ पैज पुकारा ।
है मन औ वच कर्म कृपा-वल बाँको बड़ो दशरथ्थ दुलारा ॥२०॥

कुंडलिया

रहै रोग की रूहि जौ, तौ धिग मेरा वाक ।
वात सीत आदिक सबल मानहु सिम्भु पिनाक ॥
मानहु सिम्भु पिनाक बिना रघुबर को भंजै ।
'बनादास' वलहीन कृपा दुख दारिद गंजै ॥
बानी पूरी परैगी, ज्यों विरंचि को आँक ।
रहै रोग की रूहि जौ, तौ धिग मेरा वाक ॥ २१ ॥

जब से आये सरन में, तबसे भोगे रोग।
यह अपकीरति राम की, मोर रटै सब लोग॥
मोर रटै सब लोग मुये पर अधकी गैहै।
अज्ञानी हरि विमुख अधम जीवन अति भैहै॥
पन्द्रह कला सुधारि कै, एक न विगरन जोग।
जब से आये सरन में, तबसे भोगे रोग॥ २२॥

घनाक्षरी

कुंभज समुद्र पियै हेत नाहीं देर लाये,
रोग सिन्धु लागि नाम काहे देरि किये हैं।
पी गयौ पचै गयौ, अँचै गयौ अनेक रुज,
बाँको कहूँ हनुमान सीला बीनि लिये हैं॥
कालो कालभैरो हिये हेरि कै उजेर लियो,
'बनादास' मरे रहे मानो अब जिये हैं।
जै जै कार करत दुआर राम बार बार,
भई फते फायदा चरन चित दिये हैं॥ २३॥

घनाक्षरी

कोप्येउ काल रुद्र से विसाल बल 'बनादास',
नाम को प्रताप जाप किये बार बार है।
हेरि हेरि, खोदि खोदि, रोग जारि छार किये,
हिये हुलसत कृपा-कोर सरकार है॥
ऐसो दरबार द्वार दूसरो न देखि परै,
आठ, दस, चारि, षट करत प्रचार है।
दीनबंधु, सीलसिन्धु, कृपा-निधि और कौन,
जारै जन ऐगुन धरत सिर भार है॥ २४॥

सवैया

देहौं देखाय महातम नाम को तौ जन राम को हौं सुचि साँच्यो।
आस औ बासना के बसि ह्वै जग में नट माफिक नाच न नाच्यो॥
'दासबना' कलिकाल कराल में ना तो अहै सब साधुता काँचो।
है दशरथ्य के लाल ही को बल बिस्नु बिरंचि महेस न जाँच्यो॥ २५॥

घनाक्षरी

राम रस माँहि रसाभास करै बात सीत,
अतिहि अनीति देखि रिसि उर आई है।
दिये हैं उजारि ताहि प्रजा से प्रचारि करि,
अब हरि रंग रँगो महा सुखदाई है॥
'बनादास' आनंद उदधि कौन पार लहै,
कामी ज्यों नवीन नारि निज रुचि पाई है।
मन बुद्धि बैन में समाय नाहीं सुधि राखै,
माखै जनि कोई करौं कहाँ लौ बड़ाई है॥ २६॥

कोटि जंत्र, कोटि मंत्र, कोटि तंत्र राम नाम,
निसिदिन बसु जाम काम करै मोर है।
ऐसो और साहेब न सील को निधान कोऊ,
पलक बिछोह मन माने न बरोर है॥
तन-मन रोम रोम राम रमे 'बनादास',
खड्गसूर लोक अरु बेद हू मे सोर है।
कोटि कोटि सीस बकसीस करै पायन पै,
तदपि न कृत पार जान जोग तोर है॥ २७॥

छप्पै

रोग व्याधि बसि होइ पाठ कीन्हे सुचि रच्छा।
अधिक प्रीति परतीति करै सरबौ भय भच्छा॥
'रोग पराजय' नाम, सुदर्शन चक्र समाना।
सुनि अचरज जनि करै, नाम महिमा को जाना॥
कुंभज पान समुद्र किय, महादेव विष पी गये।
कह 'वनादास' वलराम के, वृद्ध समै वे रुज भये॥ २८॥

कुंडलिया

सम्वत् नौ सै सहस है पुनि यकतालिस साल।
सन् वारह सै वान्नवे रोगहि खायो काल॥
रोगहि खायो काल गाल भरि दाँतन चावे।
'बनादास' त्रैताप पाप हरि नामै दावै॥

बचे अमूले एक हूँ छोट बड़े विकराल ।
सम्वत् नौ सै सहस है पुनि यकतालिस साल ॥ २९ ॥

भौमवार पूरन भयो, तूरन को जग जाल ।
'बनादास' बाँको बिरद, हनुमत परम कृपाल ॥
हनुमत परम कृपाल बाल मति 'दास बना' है ।
अँचै गयो सब सूल सुजस बल विपुल घना है ॥
चना सरिस चाबै चपरि, बात सीत जनुकाल ।
भौमवार पूरन भयो, तूरन को जगजाल ॥ ३० ॥

अवध-धाम सियाराम प्रिय, कुंज भौहरन नाम ।
'बनादास' आसीन तहँ, पेरक केवल राम ॥
पेरक केवल राम दास बिनु मैं हूँ चेरा ।
पूर किये सब काम दिये सुख सिन्धु बसेरा ॥
रोग पराजय ग्रन्थ भो अब न रहै कोउ बाम ।
अवध धाम सियाराम प्रिय कुंज भौहरन नाम ॥ ३१ ॥

। इति श्री सम्पूर्ण ।

दः जेठूदास सम्वत् १९४५